श्रीपरमात्मने नमः

चोखी कहानियाँ

॥ श्रीहरिः ॥

विषय-सूची

विषय	पृष्ठ-संख्या	विषय	पृष्ठ-संख्या
१-भगवान्‌का भरोसा	.. १	१७-कछुआ गुरु	.. ३२
२-अधम बालक	.. ३	१८-बगुला उड़ गया	.. ३४
३-जैसे-को-तैसा	.. ६	१९-सत्य बोलो	.. ३६
४-स्वाधीनताका सुख	.. ७	२०-सबसे बड़ा धर्मात्मा	.. ३९
५-दयाकी महिमा	.. ९	२१-नरककी यात्रा	.. ४१
६-शेरका थप्पड़	.. ११	२२-डॉक्टर साहब पिटे	.. ४२
७-भूलका फल	.. १३	२३-मनुष्य या पशु ?	.. ४५
८-मेलका फल	.. १४	२४-संतोषका फल	.. ४६
९-जैसा संग वैसा रंग	.. १७	२५-असभ्य आचार्य	.. ४८
१०-रीछकी समझदारी	.. १८	२६-सर्वस्व दान	.. ४९
११-उसने रामायण पढ़ी होती	.. १९	२७-जब डाकू रोया था	.. ५१
१२-प्रत्युपकार	.. २२	२८-मैं मनुष्य बनूँगा	.. ५२
१३-उपकार	.. २४	२९-गाली पास ही रह गयी	.. ५४
१४-पाखण्डका परिणाम	.. २७	३०-बड़ोंकी बात मानो	.. ५५
१५-बाबाजी गये चोरी करने	.. २९	३१-स्वच्छता	.. ५७
१६-मुझे मनुष्य चाहिये	.. ३०	३२-श्रद्धाके बिना सिद्धि नहीं	.. ५९

श्रीपरमात्मने नमः

चोखी कहानियाँ

भगवान्‌का भरोसा

जाड़ेका दिन था और शाम हो गयी थी। आसमानमें बादल छाये थे। एक नीमके पेड़पर बहुत-से कौए बैठे थे। वे सब बार-बार काँव-काँव कर रहे थे और एक-दूसरेसे झगड़ भी रहे थे। इसी समय एक छोटी मैना आयी और उसी नीमके पेड़की एक डालपर बैठ गयी। मैनाको देखते ही कई कौए उसपर टूट पड़े।

बेचारी मैनाने कहा—'बादल बहुत हैं, इसलिये आज जल्दी अँधेरा हो गया है। मैं अपना घोसला भूल गयी हूँ। मुझे आज रात यहाँ बैठे रहने दो।'

कौओंने कहा—'नहीं, यह पेड़ हमारा है। तू यहाँसे भाग जा।'

मैना बोली—'पेड़ तो सब भगवान्‌के हैं। इस सर्दीमें यदि वर्षा हुई और ओले पड़े तो भगवान् ही हमलोगोंके प्राण बचा सकते हैं। मैं बहुत छोटी हूँ, तुम्हारी बहिन हूँ, मुझपर तुमलोग दया करो और मुझे भी यहाँ बैठने दो।'

कौओंने कहा—'हमें तेरी-जैसी बहिन नहीं चाहिये। तू बहुत भगवान्‌का नाम लेती है तो भगवान्‌के भरोसे यहाँसे चली क्यों नहीं जाती ? तू नहीं जायगी तो हम सब तुझे मारेंगे।'

कौए तो झगड़ालू होते ही हैं, वे शामको जब पेड़पर

बैठने लगते हैं, तब आपसमें झगड़ा किये बिना उनसे रहा नहीं जाता। वे एक-दूसरेको मारते हैं और काँव-काँव करके झगड़ते हैं। कौन कौआ किस टहनीपर रातको बैठेगा यह कोई झटपट तै नहीं हो जाता। उनमें बार-बार लड़ाई होती है, फिर किसी दूसरी चिड़ियाको वे अपने पेड़पर तो बैठने ही कैसे दे सकते थे। आपसकी लड़ाई छोड़कर वे मैनाको मारने दौड़े।

कौओंको काँव-काँव करके अपनी ओर झपटते देखकर बेचारी मैना वहाँसे उड़ गयी और थोड़ी दूर जाकर एक आमके पेड़पर बैठ गयी।

रातको आँधी आयी। बादल गरजे और बड़े-बड़े ओले पड़ने लगे। बड़े आलू-जैसे ओले तड़-तड़, भड़-भड़ बंदूककी गोली-जैसे पड़ रहे थे। कौए काँव-काँव करके चिल्लाये; इधर-से-उधर थोड़ा-बहुत उड़े; परंतु ओलेकी मारसे सब-के-सब घायल होकर जमीनपर गिर पड़े। बहुत-से कौए मर गये।

मैना जिस आमपर बैठी थी, उसकी एक मोटी डाल आँधीमें टूट गयी। डाल भीतरसे सड़ गयी थी और पोली हो गयी थी। डाल टूटनेपर उसकी जड़के पास पेड़में एक खोंड़र हो गया। छोटी मैना उसमें घुस गयी। उसे एक भी ओला नहीं लगा।

सबेरा हुआ, दो घड़ी दिन चढ़नेपर चमकीली धूप निकली। मैना खोंड़रमेंसे निकली, पंख फैलाकर चहककर उसने भगवान्‌को प्रणाम किया और वह उड़ी।

पृथ्वीपर ओलेसे घायल पड़े हुए कौएने मैनाको उड़ते देखकर बड़े कष्टसे कहा—'मैना बहिन ! तुम कहाँ रही ? तुमको ओलोंकी मारसे किसने बचाया ?'

मैना बोली—'मैं आमके पेड़पर अकेली बैठी थी और भगवान्‌की प्रार्थना करती थी। दुःखमें पड़े हुए असहाय जीवको भगवान्‌के सिवा और कौन बचा सकता है।'

लेकिन भगवान् केवल ओलेसे ही नहीं बचाते और केवल मैनाको ही नहीं बचाते। जो भी भगवान्‌पर भरोसा करता है और भगवान्‌को याद करता है, उसे भगवान् सभी आपत्ति-विपत्तिमें सहायता देते हैं और उसकी रक्षा करते हैं।

अधम बालक

वर्षाके दिन थे। तालाब लबालब भरा हुआ था। मेंढक किनारेपर बैठे एक स्वरसे टर्र-टर्र कर रहे थे। कुछ लड़के स्नान करने लगे। वे पानीमें कूदे और तैरने लगे। उनमेंसे एकने पत्थर उठाया और एक मेंढकको दे मारा। मेंढक कूदकर पानीमें चला गया। मेंढकका कूदना देखकर लड़केको बड़ा मजा आया। वह बार-बार मेंढकको पत्थर मारने और उन्हें कूदते देखकर हँसने लगा।

पत्थर लगनेसे बेचारे मेंढकको चोट लगती थी। उनको मनुष्यकी भाषा बोलनी आती तो अवश्य वे

लड़केसे प्रार्थना करते और शायद उसे गाली भी देते। लेकिन बेचारे क्या करें। चोट लगती थी और प्राण बचानेके लिये वे पानीमें कूद जाते थे। अपनी पीड़ाको सह लेनेके सिवा उनके पास कोई उपाय ही नहीं था।

लड़का नहीं जानता था कि इस प्रकार खेलमें मेंढकोंको पत्थर मारना या कीड़े-मकोड़े, पतिंगे आदिको तंग करना अथवा उनकी जान ले लेना बहुत बड़ा पाप है। जो पाप करता है, उसे बहुत दुःख भोगना पड़ता है और मरनेके बाद यमराजके दूत उसे पकड़कर नरकमें ले जाते हैं। वहाँ उसे बड़े-बड़े कष्ट भोगने पड़ते हैं। लड़केको तो मेंढकोंको पत्थर मारना खेल जान पड़ता था। वह उन्हें बार-बार पत्थर मारता ही जाता था।

'इसे पकड़ ले चलो।' लड़केने पीछेसे जो यह बात सुनी तो मुड़कर देखने लगा। उसने देखा कि तीन यमदूत खड़े हैं। काले-काले यमदूत। लाल-लाल आँखें। बड़े-बड़े दाँत। टेढ़ी नाक। हाथोंमें मोटे-मोटे डंडे और रस्सी। लड़का उन्हें देखते ही डर गया। उसने साथियोंको पुकारा, पर वहाँ कोई नहीं था। वह खेलनेमें लग गया था और लड़के स्नान करके चले गये थे।

'पकड़ लो इसे !' एक यमदूतने दूसरेसे कहा।

'यह तो गुबरैले-जैसा घिनौना है।' दूसरे यमदूतने मुख बनाकर पकड़ना अस्वीकार किया।

'मैं इसे नहीं छू सकता। यह बड़ा नीच है। मेरे हाथ मैले हो जायँगे।' तीसरेने कहा।

'तब इसे फंदेमें बाँध लो और घसीटते हुए ले चलो।' पहिलेने सलाह दी। लड़का यह सब सुन रहा था। उसके प्राण मानो निकले जा रहे थे। उसने बड़ा साहस करके पूछा—'मुझे कहाँ ले जाओगे ?'

'नरकमें। जहाँ सब पापी जीते ही तेलमें पकाये जाते हैं पकौड़ीके समान।' एक यमदूत गरजकर बोला।

'पकौड़ीके समान !' लड़केको माताका पकौड़ी बनाना स्मरण आया। 'बाप रे, मैं पकौड़ीके समान पकाया जाऊँगा।'

'मैंने तुम्हारा क्या बिगाड़ा है ? मुझे छोड़ दो।' लड़केने गिड़गिड़ाकर प्रार्थना की।

'तू पापी है। तू महा अधम है। अब यदि कभी पाप न करे तो छोड़ दें। यमदूतोंमें बड़ेने कहा।

'मैं शपथ खाता हूँ, कभी पाप न करूँगा।' लड़केने बिना सोचे-समझे दोनों कान पकड़कर प्रतिज्ञा की। यमदूत तुरंत छूमंतर हो गये। लड़का भागा-भागा घर आया। उसने अपनी माताको सब बातें बताकर पूछा—'माँ ! मैंने कौन-सा पाप किया है ?'

माताने कहा—'बेटा ! निरपराध मेंढकोंको मार-मारकर तू बड़ा पाप कर रहा था। किसी भी निरपराधको कष्ट देना महापाप है।'

'पर पीड़ा सम नहिं अधमाई ॥'

जैसेको तैसा

भैंस और घोड़ेमें लड़ाई हो गयी। दोनों एक ही जंगलमें रहते थे। पास-पास चरते थे और एक ही रास्तेसे जाकर एक ही झरनेका पानी पीते थे। एक दिन दोनों लड़ पड़े। भैंसने सींग मार-मारकर घोड़ेको अधमरा कर दिया।

घोड़ेने जब देख लिया कि वह भैंससे जीत नहीं सकता, तब वह वहाँसे भागा। वह मनुष्यके पास पहुँचा। घोड़ेने उससे अपनी सहायता करनेकी प्रार्थना की।

मनुष्यने कहा—भैंसके बड़े-बड़े सींग हैं। वह बहुत बलवान् है, मैं उसे कैसे जीत सकूँगा।

घोड़ेने समझाया—मेरी पीठपर बैठ जाओ। एक मोटा डंडा ले लो। मैं जल्दी-जल्दी दौड़ता रहूँगा। तुम डंडेसे मार-मारकर भैंसको अधमरी कर देना और फिर रस्सीसे बाँध लेना।

मनुष्यने कहा—मैं उसे बाँधकर भला क्या करूँगा ?

घोड़ेने बताया—भैंस बड़ा मीठा दूध देती है। तुम उसे पी लिया करना।

मनुष्यने घोड़ेकी बात मान ली। बेचारी भैंस जब पिटते-पिटते गिर पड़ी, तब मनुष्यने उसे बाँध लिया। घोड़ेने काम समाप्त होनेपर कहा—अब मुझे छोड़ दो। मैं चरने जाऊँगा।

मनुष्य जोर-जोरसे हँसने लगा। उसने कहा—मैं तुमको भी बाँधे देता हूँ। मैं नहीं जानता था कि तुम मेरे चढ़नेके काम आ सकते हो। मैं भैंसका दूध पीऊँगा और तुम्हारे ऊपर चढ़कर दौड़ा करूँगा।

घोड़ा बहुत रोया। बहुत पछताया। अब क्या हो सकता था। उसने भैंसके साथ जैसा किया, वैसा फल उसे खुद ही भोगना पड़ा।

'जो जस करइ सो तस फलु चाखा ॥'

स्वाधीनताका सुख

एक दिन एक ऊँट किसी प्रकार अपने मालिकसे नकेल छुड़ाकर भाग खड़ा हुआ। वह भागा, भागा और सीधे पश्चिम भागता गया, वहाँतक जहाँ रास्तेमें एक नदी आ गयी। अब आगे भागनेका रास्ता बंद हो गया। वह रास्तेमें हरे-भरे खेत, पत्तेभरी झाड़ियाँ और खूब घने नीमके पेड़ छोड़ आया था। वह चाहता तो अपनी ऊँची गर्दन उठाकर पत्तियोंसे पेट भर लेता, लेकिन वह वहाँसे दूर भाग आया था।

सामने चौड़ी गहरी धारा बह रही थी। पीछे ऊँचा कगार खड़ा था और दोनों ओर दूरतक रेत-ही-रेत थी। कहीं हरियालीका नामतक नहीं था। बेचारा ऊँट वहाँ आकर खड़ा हो गया और जब थक गया तो बैठ गया। वह डरके मारे बलबला भी नहीं सकता था। कहीं

ऊँटवाला आकर उसे पकड़ न ले। उसे खूब भूख लगी थी, लेकिन पानीके सिवा वहाँ था भी क्या। वह लाचार था।

दो-तीन दिन बीत गये। भूखसे ऊँट अधमरा हो गया। उसी समय एक कौआ आया। उसे ऊँटकी दशापर दया आ गयी। उसने कहा—'ऊँट भाई ! मैं उड़ता हूँ, तुम मेरे पीछे चलो। मैं तुम्हें हरे खेततक पहुँचा दूँगा।'

ऊँट बड़ा प्रसन्न हुआ। उसने कौएको धन्यवाद दिया। चलनेको तैयार हो गया। उसी समय उसे याद आया और उसने पूछा—'भाई ! उस खेतमें कभी आदमी तो नहीं आता ?'

कौआ हँस पड़ा। उसने कहा—'भला, हरा खेत आदमीके बिना कैसे होगा ?'

'तब तो मैं यहीं अच्छा हूँ।' ऊँटने खिन्न होकर कहा।

'यहाँ तो तुम भूखों मर जाओगे।' कौएने समझाया।

'लेकिन यहाँ रात-दिन नकेल डालकर कोई सताया तो नहीं करेगा। ऊँटने संतोष एवं गर्वभरे स्वरमें उत्तर दिया। सच तो है—

'पराधीन सपनेहुँ सुखु नाहीं ॥'

★

दयाकी महिमा

एक बहेलिया था। चिड़ियोंको जालमें या गोंद लगे बड़े भारी बाँसमें फँसा लेना और उन्हें बेच डालना ही उसका काम था। चिड़ियोंको बेचकर उसे जो पैसे मिलते थे, उसीसे उसका काम चलता था।

एक दिन वह बहेलिया अपनी चद्दर एक पेड़के नीचे रखकर अपना बड़ा भारी बाँस लिये किसी चिड़ियाके पेड़पर आकर बैठनेकी राह देखता बैठा था। इतनेमें एक टिटिहरी चिल्लाती दौड़ी आयी और बहेलियेकी चद्दरमें छिप गयी।

टिटिहरी ऐसी चिड़िया नहीं होती कि उसे कोई पालनेके लिये खरीदे। बहेलिया उठा और उसने सोचा कि अपनी चद्दरमेंसे टिटिहरीको भगा देना चाहिये। इसी समय वहाँ ऊपर उड़ता एक बाज दिखायी पड़ा। बहेलिया समझ गया कि यह बाज टिटिहरीको पकड़कर खा जानेके लिये झपटा होगा, इसीसे टिटिहरी डरकर मेरी चद्दरमें छिपी है। बहेलियेके मनमें टिटिहरीपर दया आ गयी। उसने ढेले मारकर बाजको वहाँसे भगा दिया। बाजके चले जानेपर टिटिहरी चद्दरसे निकलकर चली गयी।

कुछ दिनों पीछे बहेलिया बीमार हुआ और मर गया। यमराजके दूत उसे पकड़कर यमपुरी ले गये। यमपुरीमें कहीं आग जल रही थी, कहीं चूल्हेपर बड़े भारी कड़ाहेमें तेल उबल रहा था। पापी लोग आगमें भूने जाते थे, तेलमें

उबाले जाते थे। यमराजके दूत पापियोंको कहीं कोड़ोंसे पीटते थे, कहीं कुल्हाड़ीसे काटते थे। और भी भयानक कष्ट पापियोंको वहाँ दिया जाता था। बहेलियेके वहाँ जाते ही, वहाँ सैकड़ों, हजारों चिड़ियाँ आ गयीं और वे कहने लगीं—'इसने हमें बिना अपराधके फँसाया और बेचा है। हम इसकी आँखें फोड़ देंगी और इसका मांस नोच-नोचकर खायँगी।'

बेचारा बहेलिया डरके मारे थर-थर काँपने लगा। उसी समय वहाँ एक टिटिहरी आयी। उसने हाथ जोड़कर यमराजसे कहा—'महाराज! इसने बाजसे मेरे प्राण बचाये हैं। इसको आप क्षमा करें।'

यमराज बोले—'यह बड़ा पापी है। सब चिड़ियाँ इसे नोचेंगी और फिर इसे जलाया जायगा और कुल्हाड़ोंसे काटा जायगा। लेकिन यह छोटी टिटिहरी इसको बचाने आयी है। इसने एक बार इस चिड़ियापर दया की है। इसलिये इसको अभी संसारमें लौटा दो और इसे एक वर्ष जीने दो।'

यमराजके दूत बहेलियेके जीवको लौटा लाये। बहेलियेके घरके लोग उसकी देहको श्मशान ले गये थे और चितापर रखनेवाले थे। वे लोग रो रहे थे। इतनेमें बहेलिया जी गया। वह बोलने और हिलने लगा। उसके घरके लोग बहुत प्रसन्न हुए और उसके साथ घर लौट आये।

बहेलियेको यमराजकी बात याद थी। उसने चिड़िया पकड़ना छोड़ दिया। अपने भाइयोंसे भी चिड़िया

पकड़नेका काम उसने छुड़ा दिया। वह मजदूरी करने लगा। सबेरे और शामको वह रोज चिड़ियोंको थोड़े दाने डालता था। बहुत-सी चिड़ियाँ उसके दाने खा जाया करती थीं। अब रोज वह भगवान्‌की प्रार्थना करता था और भगवान्‌का नाम जपता था। इससे बहेलियेके सब पाप कट गये। एक वर्ष बाद जब वह मरा, तब उसे लेने देवताओंका विमान आया और वह स्वर्ग चला गया।

तुम्हें भी किसी भी जीवको कष्ट नहीं देना चाहिये। सभी जीवोंपर दया करनी चाहिये। जो जीवोंपर दया करता है, उसपर भगवान् प्रसन्न होते हैं।

पर हित सरिस धर्म नहिं भाई।
पर पीड़ा सम नहिं अधमाई॥

—★—

शेरका थप्पड़

एक ब्राह्मण देवता थे। बड़े गरीब और सीधे थे। देशमें अकाल पड़ा। अब भला ब्राह्मणको कौन सीधा दे और कौन उनसे पूजा-पाठ करावे। बेचारे ब्राह्मणको कई दिनोंतक भोजन नहीं मिला।

ब्राह्मणने सोचा—'भूखसे मरनेसे तो प्राण दे देना ठीक है।'

वे जंगलमें मरनेके विचारसे गये। मरनेके पहले उन्होंने शुद्ध हृदयसे भगवान्‌का नाम लिया और प्रार्थना की। इतनेमें एक शेर दिखायी पड़ा। ब्राह्मणने कहा—'मैं

तो मरने आया ही था। यह मुझे खा ले तो अच्छा।'

शेरने पास आकर पूछा—'तू डरता क्यों नहीं ?'

ब्राह्मणने सब बातें बताकर कहा—'अब तुम मुझे झटपट मारकर खा डालो।' सच्ची बात यह थी कि उस वनके देवताको ब्राह्मणपर दया आ गयी थी। वही शेर बनकर आया था। उसने ब्राह्मणको पाँच सौ अशर्फियाँ दीं। ब्राह्मण घर लौट आया। सबेरे जब ब्राह्मण अशर्फी लेकर वहाँके बनियेसे आटा-दाल खरीदने गया तब बनियेने पूछा कि अशर्फी कहाँ मिली ? ब्राह्मणने सच्ची बात बता दी और वह आटा-चावल आदि लेकर घर आ गया।

बनिया बड़ा लोभी था। वह रातको अशर्फियोंके लोभसे वनमें गया। उसने भी जीभसे भगवान्‌का नाम लिया और प्रार्थना की। शेर आया। बनियेने कहा—'तुम झटपट मुझे खाकर पेट भर लो।'

शेरने कहा—'मैं तेरे-जैसे लोभीको अवश्य खा जाता। पर किसी भी बहाने भगवान्‌का नाम तो तूने लिया ही है, अतः तुझे मारूँगा नहीं; केवल थोड़ा-सा दण्ड दूँगा।'

शेरने बनियेको एक पंजा मारा। उसका एक कान चिथड़े-चिथड़े होकर उड़ गया। एक आँख फूट गयी। उसे लोभका यही पुरस्कार मिला।

——★——

भूलका फल

रातमें वर्षा हुई थी। सबेरे रोजसे अधिक चमकीली धूप निकली।

बकरीके बच्चेने माँका दूध पिया, भर पेट पिया। फिर घास सूँघकर फुदका। गीली नम भूमिपर उसे कूदनेमें बड़ा मजा आया और वह चौकड़ियाँ भरने लगा। पहिले माताके समीप उछलता रहा और फिर जब कानोंमें वायु भर गयी तो दूरकी सूझी।

माँने कहा—'बेटा! दूर मत जा। कहीं जंगलमें भटक जायगा।'

वह थोड़ी दूर निकल गया था। उसने वहींसे कह दिया—'मैं थोड़ी देरमें खेल-कूदकर लौट आऊँगा। तू मेरी चिन्ता मत कर। मैं रास्ता नहीं भूलूँगा।'

माता मना करती रही, लेकिन वह तो दूर जा चुका था। उसे अपनी समझपर अभिमान था और माताके मना करनेपर उसे झुँझलाहट भी आयी थी।

वह कूदनेमें मस्त था। चौकड़ी लगानेमें उसे रास्तेका पता ही नहीं रहा। उसने जंगलको देखा और यह सोचकर कि थोड़ी दूरतक आज जंगल भी देख लूँ, आगे बढ़ गया। सचमुच वह जंगलमें भटक गया और इसका पता उसे तब लगा, जब वह कूदते-उछलते थक गया। जब उसने लौटना चाहा तो उसे रास्तेका पता ही नहीं था। वह कँटीली घनी झाड़ियोंके बीच रास्ता ढूँढ़नेके लिये भटकता ही रहा।

'अरे, तू तो बहुत अच्छा आया। मुझे तीन दिनसे भोजन नहीं मिला है।' पासकी झाड़ीसे एक बड़ा-सा भेड़िया यह कहते हुए निकल पड़ा।

बकरीके बच्चेको न तो उत्तर देनेका अवकाश मिला और न रोनेका। उसे केवल मनमें अपने मालिक गड़ेरियेकी एक बात स्मरण आयी—

मातु पिता गुरु स्वामि सिख सिर धरि करहिं सुभायँ।
लहेउ लाभु तिन्ह जनम कर नतरु जनमु जग जायँ॥

—★—

मेलका फल

अपने देशमें ऐसे बहुत-से नगर और गाँव हैं, जहाँ बहुत थोड़े पेड़ हैं। यदि वहाँ गाय-बैल भी कम हों और गोबर थोड़ा हो तो रसोई बनानेके लिये लकड़ी या उपले बड़ी कठिनाईसे मिलते हैं।

एक छोटा-सा बाजार था। उसके आस-पास पेड़ कम थे और बाजारमें किसानोंके घर न होनेसे गाय-बैल भी थोड़े थे। जलानेके लिये लकड़ी और उपले वहाँके लोगोंको खरीदना पड़ता था। दो-तीन दिन वर्षा हुई थी, इसीसे गाँवोंसे कोई मजदूर बाजारमें लकड़ी या उपला बेचने नहीं आया था। इससे कई घरोंमें रसोई बनानेको ईंधन ही नहीं बचा था।

उस गाँवके दो लड़के, जो सगे भाई थे, अपने घरके लिये सूखी लकड़ी ढूँढ़ने निकले। उनके पिता घरपर

नहीं थे। उनकी माता बिना सूखी लकड़ीके कैसे रोटी बनाती और कैसे अपने लड़कोंको खिलाती। दोनों लड़के अपने पिताके लगाये आमके पेड़के नीचे गये। वहाँ उन्होंने देखा कि आमकी एक मोटी सूखी डाल आँधीसे टूटकर नीचे गिरी है।

बड़े लड़केने कहा—'लकड़ी तो मिल गयी, लेकिन हमलोग इसे कैसे ले जायँगे ?'

छोटेने कहा—'हम इसे छोड़कर जायँगे तो कोई दूसरा उठा ले जायगा।'

लेकिन वे क्या करते। बड़ा भाई दस वर्षका था और छोटा साढ़े आठ वर्षका। इतनी बड़ी लकड़ी उनसे उठ नहीं सकती थी। इतनेमें छोटे लड़केने देखा कि सूखी लकड़ीसे गिरे एक मोटे बड़े सफेद कीड़ेको, जो कि मर गया है, बहुत-सी चींटियाँ उठाये लिये जा रही हैं। छोटा लड़का चिल्लाया—'भैया ! यह क्या है ?'

बड़ेने कहा—'ये तो चींटियाँ कीड़ेको ले जा रही हैं।'

छोटा भाई बोला—'इतनी छोटी चींटियाँ इतने बड़े कीड़ेको कैसे ले जाती हैं ?'

बड़े भाईने कहा—'देखो तो कितनी चींटियाँ हैं। ये सब मिलकर इस कीड़ेको ले जाती हैं। बहुत-सी चींटियाँ मिलकर तो मरे हुए साँपको भी घसीट ले जाती हैं।'

चींटियाँ कीड़ेको धीरे-धीरे खिसका रही थीं। कीड़ा मोटा था। वह बार-बार लुढ़क पड़ता था। कभी-कभी दस-पाँच चींटियाँ उसके नीचे दब भी जाती थीं। लेकिन

दूसरी चींटियाँ उस कीड़ेको हिलाकर झट दबी चींटियोंको निकाल देती थीं। काली-काली छोटी चींटियाँ थकनेका नाम ही नहीं लेती थीं। लड़कोंके देखते-देखते वे कीड़ेको दूरतक धीरे-धीरे सरकाकर ले गयीं।

छोटा लड़का तो प्रसन्न हो गया। उसने ताली बजायी और कूदने लगा। फिर वह आमसे गिरी सूखी लकड़ीपर जाकर बैठ गया और बोला—'भैया! हमलोग क्या चींटियोंसे भी गये-बीते हैं। तू जाकर अपने मित्रोंको बुला ला। मैं यहाँ बैठता हूँ। हम सब लड़के मिलकर लकड़ी उठा ले जायँगे।'

बड़ा लड़का बाजारमें गया और अपने मित्रोंको बुला लाया। बहुत-से लड़के लगे और उन्होंने उस भारी लकड़ीको लुढ़काना और ठेलना प्रारम्भ किया। सबने लगकर वह लकड़ी उन दोनों भाइयोंके घर पहुँचा दी।

उन लड़कोंकी माताने अपने पुत्रोंके साथ आये लड़कोंको मिठाई दी और कहा—'बच्चो! मेलमें बहुत बल होता है। तुमलोग मिलकर कठिन-से-कठिन काम कर सकते हो और तुमलोग मिलकर रहोगे तो कोई भी तुम्हारी कोई हानि नहीं कर सकेगा। आपसमें मिलकर रहनेसे तुमलोगोंका मन भी प्रसन्न रहेगा और तुम्हारे काम भी सरलतासे हो जाया करेंगे।

—★—

जैसा संग वैसा रंग

एक बाजारमें एक तोता बेचनेवाला आया। उसके पास दो पिंजड़े थे। दोनोंमें एक-एक तोता था। उसने एक तोतेका मूल्य रखा था—पाँच सौ रुपये और एकका रखा था पाँच आने पैसे। वह कहता था कि 'कोई पहिले पाँच आनेवालेको लेना चाहे तो ले जाय, लेकिन कोई पहिले पाँच सौ रुपयेवालेको लेना चाहेगा तो उसे दूसरा भी लेना पड़ेगा।'

वहाँके राजा बाजारमें आये। तोतेवालेकी पुकार सुनकर उन्होंने हाथी रोककर पूछा—'इन दोनोंके मूल्योंमें इतना अन्तर क्यों है ?'

तोतेवालेने कहा—'यह तो आप इनको ले जायँ तो अपने-आप पता लग जायगा।'

राजाने तोते ले लिये। जब रातमें वे सोने लगे तो उन्होंने कहा कि 'पाँच सौ रुपयेवाले तोतेका पिंजड़ा मेरे पलंगके पास टाँग दिया जाय।' जैसे ही प्रातः चार बजे, तोतेने कहना आरम्भ किया—'राम, राम, सीता-राम !' तोतेने खूब सुन्दर भजन गाये। सुन्दर श्लोक पढ़े। राजा बहुत प्रसन्न हुए।

दूसरे दिन उन्होंने दूसरे तोतेका पिंजड़ा पास रखवाया। जैसे ही सबेरा हुआ, उस तोतेने गंदी-गंदी गालियाँ बकनी आरम्भ कीं। राजाको बड़ा क्रोध आया। उन्होंने नौकरसे कहा—'इस दुष्टको मार डालो।'

पहिला तोता पास ही था। उसने नम्रतासे प्रार्थना की—'राजन् ! इसे मारो मत ! यह मेरा सगा भाई है।' हम दोनों एक साथ जालमें पड़े थे। मुझे एक संतने ले लिया। उनके यहाँ मैं भजन सीख गया। इसे एक म्लेच्छने ले लिया। वहाँ इसने गाली सीख ली। इसका कोई दोष नहीं है, यह तो बुरे सङ्गका नतीजा है। राजाने उस रद्दी तोतेको मारा नहीं, उसे उड़ा दिया।

रीछकी समझदारी

वह शिकार खेलने गया था। लम्बी मारकी बंदूक थी और कन्धेपर कारतूसोंकी पेटी पड़ी थी। सामने ऊँचा पर्वत दूरतक चला गया था। पर्वतसे लगा हुआ खड्ड था, कई हजार फीट गहरा। पतली-सी पगडंडी पर्वतके बीचसे खड्डके उस पारतक जाती थी। उस पार जंगली बेर हैं और इस समय खूब पके हैं। वह जानता था कि रीछ बेर खाने जाते होंगे।

उसने देखा, एक छोटा रीछ इस पारसे पगडंडीपर होकर उस पार जा रहा है। गोली मारनेसे रीछ खड्डमें गिर पड़ेगा। कोई लाभ न देखकर वह चुपचाप खड़ा रहा। दूरबीन लगाते ही उसने देखा कि उस पारसे उसी पगडंडीपर दूसरा बड़ा रीछ इस पारको आ रहा है।

'दोनों लड़ेंगे और खड्डमें गिरकर मर जायँगे।' वह अपने-आप बड़बड़ाया। पगडंडी इतनी पतली थी कि

उसपरसे न तो पीछे लौटना सम्भव था और न दो एक साथ निकल सकते थे। वह गौरसे देखने लगा।

'एकको गोली मार दूँ, लेकिन दूसरा चौंक जायगा और चौंकते ही वह भी गिर जायगा।' देखनेके सिवा कोई रास्ता नहीं।

दोनों रीछ आमने-सामने हुए। पता नहीं, क्या वाद-विवाद करने लगे अपनी भाषामें। पाँच मिनटमें ही उनका भलभलाना बंद हो गया और शिकारीने देखा कि बड़ा रीछ चुपचाप जैसे था, वैसे ही बैठ गया। छोटा उसके ऊपर चढ़कर आगे निकल गया और तब बड़ा उठ खड़ा हुआ।

'ओह, पशु इतना समझदार होता है और मूर्ख मनुष्य आपसमें लड़ते हैं।' शिकारी बिना गोली चलाये लौट आया। उसने शिकार करना छोड़ दिया।

'सठ सुधरहिं सतसंगति पाई।'

उसने रामायण पढ़ी होती

हुएन सांगची लाऊ, यही नाम था उसका। पिता उसे सांग कहते थे। जी चाहे तो आप भी इसी नामसे पुकारिये। उसका पिता शिकारी था। रीछ फँसाता, हिरन मारता और फिर उनके चमड़े बेच डालता। यही रोजगार था बाप-दादोंसे उसके घरका।

एक दिन पिताने उसे एक बड़े पेड़की छायामें बैठा दिया और स्वयं बंदूक लेकर एक ओर जंगलमें चला

गया। घरमें न माँ है और न कोई भाई-बहिन। इसलिये सूने घरमें उसका मन लगता नहीं था। मास्टरजीकी बेंतके डरसे वह पाठशाला नहीं जाता। दूसरे लड़के पढ़ने चले जाते हैं। भला, गाँवमें किसके साथ खेले ?

पिताके साथ रोज जंगलमें जाता है। कभी चिड़ियोंको उड़ाता है, कभी खरगोशके पीछे दौड़ता है। झरबेरी और आड़ू भी कभी-कभी खानेको मिल जाते हैं। वह शिकारीका लड़का है। उसे अकेले जंगलमें दौड़ने और खेलनेमें डर नहीं लगता।

एक दिन पिताके चले जानेपर वह घूम रहा था। एक ओरसे 'खों-खों'की आवाज आयी। वह देखने दौड़ गया। एक बड़ा-सा रीछ कँटीली झाड़ियोंमें उलझ गया था। बड़े-बड़े बालोंमें काँटे फँसे थे। एक ओरसे काँटे छुड़ाता तो दूसरी ओर उलझ जाते। रीछ घबरा गया था। लड़केको दया आ गयी। वह पास चला गया। उसने काँटे छुड़ाकर रीछको छुटकारा दे दिया।

रीछ बड़े जोरसे चिल्लाया। लड़केके सामने खड़े होकर देरतक भलभलाता रहा। लड़का डर रहा था, मुझे खा न जाये। भाग भी नहीं सकता था। रीछ जाने क्या व्याख्यान दे रहा था। थोड़ी देरमें रीछ उलटे भाग गया। लड़केकी जानमें जान आयी।

रीछ किसीपर चिढ़ जाय तो बड़ा भयानक शत्रु होता है, वह पेड़पर भी चढ़ जाता है। लेकिन किसीपर प्रसन्न हो जाय तो मित्र भी बहुत अच्छा होता है। अपनेपर उपकार

करनेवालेका उपकार वह भूलता नहीं है। जो लोग दूसरे प्राणियोंपर दया करते हैं, उन्हें उस दया और उपकारका फल भी मिलता है। संसारके बहुत-से प्राणी मनुष्यके उपकारका बड़ा सुन्दर बदला उपकार करके चुकाते हैं। रीछकी भाषा लड़का नहीं समझता था। किंतु रीछने उससे कहा था—मैं तुम्हारा मित्र हूँ। मैं तुम्हारे लिये अभी मीठे फल लेकर आता हूँ।

लड़का वहाँसे बहुत दूर भाग जाना चाहता था। वह दौड़ा जा रहा था। वह कुछ ही दूर जा पाया था कि रीछ फिर आ गया। अबकी बार वह कई सुन्दर-सुन्दर फल लाया था। उसने लड़केके हाथोंमें फल दे दिये। लड़केने खाकर देखा कि बहुत मीठे हैं वे फल।

लड़के और रीछकी दोस्ती हो गयी। इस मित्रतासे लड़केका बाप बहुत प्रसन्न था। रीछ लड़केको रोज मीठे-मीठे फल लाकर देता था। लड़का अपने पिताको भी वे फल देता था। एक दिन लड़केने जंगलमें आते ही देखा कि उसके मित्र रीछकी आँखें दुखनी आ गयी हैं। वह एक पेड़के तनेसे लगकर बैठा है और 'हूँ' 'हूँ' करके रो रहा है। लड़केको हँसी आ गयी। वह ताली बजाकर हँसने लगा। रीछको आया गुस्सा और उसने लड़केकी नाक नोच खायी। लड़केकी यह दुर्दशा क्यों होती, यदि उसने रामायण पढ़ी होती। यदि उसने रामायणकी शिक्षा ली होती तो उसे पता होता कि—

जे न मित्र दुख होहिं दुखारी।
तिन्हहि बिलोकत पातक भारी॥

प्रत्युपकार

शेरकी गुफा थी। खूब गहरी, खूब अँधेरी। उसीमें बिल बनाकर एक छोटी चुहिया भी रहती थी। शेर जो शिकार लाता, उसकी बची हड्डियोंमें लगा मांस चुहियाके लिये बहुत था। शेर जब जंगलमें चला जाता, तब वह बिलसे निकलती और हड्डियोंमें लगे मांसको कुतरकर पेट भर लेती। खूब मोटी हो गयी थी वह।

एक दिन शेर दोपहरमें सोया था। चुहियाको भूख लगी। वह बिलसे बाहर निकली और उसने अपना पेट भर लिया। पास रहते-रहते उसका भय दूर हो गया था। पेट भर जानेपर वह शेरके शरीरपर चढ़ गयी। शेरका कोमल चिकना शरीर उसे बहुत पसंद आया। उसे बड़ा आनन्द आया। वह उसके पैर, पीठ, गर्दन और मुखपर इधर-से-उधर दौड़ने लगी।

इस धमाचौकड़ीमें शेरकी नींद खुल गयी। उसने पंजा उठाकर चुहियाको पकड़ लिया और डाँटा—'क्यों री, मेरे शरीरपर यह क्या ऊधम मचा रखा है तूने ?'

चुहियाकी सिट्टीपिट्टी गुम हो गयी। अब मरी तब मरी। किसी प्रकार काँपते-काँपते बोली—'महाराज ! मुझसे सचमुच बड़ा भारी अपराध हो गया ! पर आप समर्थ हैं, यदि मुझे क्षमा करके प्राणदान दे दें तो मैं शक्तिभर आपकी सेवा करूँगी।'

शेर हँस पड़ा। उसने चुहियाको छोड़ते हुए कहा— 'जा, तू मेरी सेवा तो क्या करेगी और जंगलके राजाको नन्हीं चुहियाकी सेवासे करना भी क्या है, पर तुझे क्षमा करता हूँ।'

संयोगकी बात—किसी अजायबघरको जीवित शेरकी आवश्यकता थी। जंगलमें जाल लगाया गया। शेर उसमें फँस गया। वह दहाड़ने और चिल्लाने लगा।

शेर बहुत शक्तिशाली था। वह बार-बार पंजे मारता था, दाँतोंसे जालको काटना चाहता था और उछलकर भागना चाहता था। लेकिन जाल ऐसा-वैसा नहीं था। शेरको फँसानेके लिये भला कोई कमजोर जाल कैसे बिछा सकता है। शेर जितना उछलता और पंजे मारता था, जालके फंदे उतने ही कसते जाते थे। शेरके पंजेके नखों और मुँहसे भी रक्त आने लगा था, किंतु वह बराबर जालको नोचता ही जाता था। इससे हुआ यह कि जाल बहुत अधिक कड़ा हो गया। उसके बन्धन इतने कस गये कि शेर अब हिल भी नहीं सकता था।

जंगलका राजा शेर जालमें पड़ा-पड़ा दहाड़ रहा था। वह कभी किसीसे डरा नहीं था, कभी किसीने उसे बाँधा नहीं था, उसे बन्धनमें पड़ना बहुत बुरा लग रहा था, किंतु अब वह कर भी क्या सकता था। वह दहाड़ रहा था और कुछ-कुछ डर भी रहा था कि कोई उसे पकड़ने आवेगा। उसे क्रोध तो खूब ही आ रहा था।

शेरकी आवाज चुहियाने पहचानी। वह दौड़ी आयी और बोली—'महाराज ! आप चुप रहें। दहाड़नेसे दूर गये शिकारी दौड़ आयेंगे और मुझे भी डर लगेगा। मैं काम नहीं कर सकूँगी। मैं जाल कुतर देती हूँ।'

शेर चुप हो गया। बड़ा मजबूत जाल था। चुहियाके

दाँतोंसे रक्त निकलने लगा, पर उसने जाल तो काट ही दिया। शेर कुछ बोले, इससे पहिले चुहियाने कहा—'आप जल्दी भागिये ! मेरा क्या यह कम सौभाग्य है कि मैं अपने जीवनदाता एवं जंगलके महाराजकी कुछ सेवा कर सकी।' शेरने केवल इतना कहा—

'भलो भलाइहि पै लहइ।'

—★—

उपकार

अफ्रीका बड़ा भारी देश है। उस देशमें बहुत घने वन हैं और उन वनोंमें सिंह, भालू, गैंडा आदि भयानक पशु बहुत होते हैं। बहुत-से लोग सिंहका चमड़ा पानेके लिये उसे मारते हैं।

गरमीके दिनोंमें हाथी जिस रास्ते झरनेपर पानी पीने जाते हैं, उस रास्तेमें लोग बड़ा भारी गहरा गड्ढा खोद देते हैं और उस गड्ढेके चारों ओर लकड़ियोंको भालेके समान नोंकवाली करके गाड़ देते हैं। फिर गड्ढेको पतली लकड़ियों और पत्तोंसे ढक देते हैं। जब हाथी पानी पीने निकलते हैं तो उनके दलका आगेका हाथी गड्ढेके ऊपर टहनियोंके कारण गड्ढेको देख नहीं पाता और जैसे ही टहनियोंपर पैर रखता है, टहनियाँ टूट जाती हैं और हाथी गड्ढेमें गिर जाता है। पीछे हाथी पकड़नेवाले गड्ढेमें एक ओर रास्ता खोदकर दूसरे पालतू हाथियोंकी सहायतासे उस हाथीको पकड़ लाते हैं।

हाथी पकड़नेवाले उस हाथीको लाकर पहले कई दिन भूखा रखते हैं। गड्ढेमें भी हाथी कई दिन भूखा रखा जाता है, जिससे कमजोर हो जानेके कारण निकलते समय बहुत धूम न मचावे। भूखके मारे जब हाथी छटपटाने लगता है, तब कोई आदमी उसे चारा देने जाता है। चारा देनेके बहाने वह आदमी हाथीसे धीरे-धीरे जान-पहचान कर लेता है और फिर हाथीको वही सिखाता है। शिक्षा देनेके बाद हाथीको लोग बेच देते हैं।

कई बार हाथी पकड़नेके लिये जो गड्ढा बनाया जाता है, उसमें रातको धोखेसे हिरन, नीलगाय, चीते या जंगलके दूसरे पशु भी गिर जाते हैं। गड्ढा बनानेवाले उन्हें भी निकाल लाते हैं।

हाथी पकड़नेवालोंने अफ्रीकाके जंगलमें एक बार हाथी फँसानेके लिये गड्ढा बनाया और ढक दिया। रातमें एक सिंह उस गड्ढेमें गिर पड़ा। सिंह किसी छोटे पशुको पकड़ने दौड़ा होगा और भूलसे गड्ढेमें जा पड़ा होगा।

एक शिकारी उधरसे निकला। उसने सिंहको गड्ढेमें गिरा देखा। वीर पुरुष किसीको दुःखमें देखकर उसे मारते नहीं, उसकी सहायता करते हैं। सिंह बार-बार उछलता था; परंतु गड्ढेके चारों ओर गड़ी नोकवाली लकड़ियोंसे उसे चोट लगती थी और वह फिर गड्ढेमें गिर जाता था। शिकारीने एक रस्सीमें दो लकड़ियोंको बाँधा और पेड़पर चढ़ गया। पेड़परसे रस्सी खींचकर उसने लकड़ियाँ उखाड़ दीं। शिकारीने नीचेसे लकड़ियाँ इसलिये नहीं उखाड़ीं कि

कहीं गड्ढेसे निकलनेपर सिंह उसे मार न डाले। दो लकड़ियाँ उखड़नेसे सिंहको रास्ता मिल गया। वह उछलकर गड्ढेसे बाहर निकल आया।

वह शिकारी एक दिन एक झरनेके किनारे पानी पीकर, बंदूक रखकर बैठा था। वह बहुत थका था, इसलिये लेट गया और उसे नींद आ गयी। इतनेमें एक चीता वहाँ आया और शिकारीको मारनेके लिये उसपर चढ़ बैठा। बेचारा शिकारी डरके मारे चिल्ला भी न सका।

इतनेमें एक भारी सिंह जोरसे गर्जा। उसकी गर्जना सुनकर चीता पूँछ दबाकर भागने लगा; पर सिंह चीतेके ऊपर कूद पड़ा और उसने चीतेको चीर-फार डाला।

शिकारी समझता था कि चीतेको मारकर सिंह अब उसे मारेगा; लेकिन सिंह आया और शिकारीके सामने बैठकर पूँछ हिलाने लगा। शिकारीने पहचान लिया कि यह वही सिंह है, जिसे गड्ढेमेंसे निकलनेमें शिकारीने सहायता दी थी।

सिंह-जैसा भयङ्कर पशु भी अपने उपकार करनेवालेको नहीं भूला था। तुम मनुष्य हो, तुम्हें तो अपनेपर कोई थोड़ा भी उपकार करे तो उसे नहीं भूलना चाहिये और उस उपकारीकी सेवा-सहायता करनेके लिये सदा तैयार रहना चाहिये।

——★——

पाखण्डका परिणाम

एक सियार था। एक दिन उसे जंगलमें कुछ खानेको न मिला। बड़ी भूख लगी थी। अन्तमें वह बस्तीमें कुछ खानेकी खोजमें आया। अँधेरी रात थी। लोग सो गये थे। जाड़ेका दिन था। घरोंके दरवाजे बंद थे। सियार गली-गली भटकता फिरा।

एक धोबीका घर था। गधे बँधे थे। एक नाँदमें कपड़े भीग रहे थे और एकमें कुछ और था। सियारको गन्ध-सी आयी। सोचा, शायद कुछ पेटमें डालनेको मिल जाय। नाँद ऊँची थी। कूदा और नाँदमें गिर पड़ा। जाड़ेके दिन, रात्रिका समय, ठंडे पानीमें गिरनेसे दुर्दशा हो गयी। कूदा और थर-थर काँपता सीधा जंगलकी ओर भागा।

प्रातःकाल नालेके पानीसे पेट भरने गया। पानीमें छाया देखकर दंग रह गया। रातको वह नीलकी नाँदमें गिर पड़ा था। सूरत बदल गयी थी। बड़ा प्रसन्न हुआ। जंगलमें जानवरोंकी सभा बुलायी, उसने घोषित किया कि 'मैं नीलाकर हूँ। मुझे ब्रह्माने जंगलका राजा बनाकर भेजा है। जो मेरी आज्ञा नहीं मानेगा, उसे बहुत भयङ्कर दण्ड मिलेगा।'

जानवरोंने ऐसे अद्भुत रंगका पशु कहाँ देखा था। उन्होंने सियारकी बात मान ली। वह जंगलका राजा हो गया। सबपर रोब गाँठने लगा।

उस सियारने शेरको अपना मन्त्री बनाया, चीतेको सेनापति बनाया। दूसरे पशुओंकी उसने सेना बनायी।

वह बैठा-बैठा सबको आज्ञा देता था। शेर उसके लिये शिकार मार लाता था। रीछ उसे बेर और दूसरे वनके फल लाकर देते थे। वह खुद कोई काम नहीं करता था। सब पशु

उसे नीलाकर महाराज कहकर पुकारते और प्रणाम करते थे।

उस ढोंगी सियारको अपनी जातिवालोंसे चिढ़ थी। उन सियारोंको अपने पास भी नहीं आने देता था। उसे डर लगता था कि कोई सियार उसे पहचान न ले। किसी सियारको वह मिलनेका समय नहीं देता था। उसने चीतेसे कह दिया था कि सभी सियारोंको वनसे भगा दो। सियारोंमें नये राजाकी इस आज्ञासे बड़ी हलचल मची थी। अभीतक किसी राजाने उन्हें वनमेंसे निकाला नहीं था। कोई सिंह सियारोंको मारता भी नहीं था। इस नये राजाने तो उन्हें एकदम जंगलसे बाहर ही खदेड़ देनेको कह दिया। सियार बार-बार आपसमें मिलते थे और सलाह करते थे कि कैसे राजाको मनाया जाय। अपना घर छोड़कर वे बेचारे कहाँ जाते, लेकिन कोई उपाय नहीं दीखता था।

एक दिन एक काने सियारने अपनी जातिवालोंसे कहा— 'यह नया राजा तो विचित्र है। इसके न तो दाँत मजबूत हैं और न पंजे ! यह बलवान् भी नहीं जान पड़ता। जंगलका राजा शेर तो दूसरेका मारा शिकार छूतातक नहीं और यह सदा दूसरोंसे अपने लिये शिकार मँगवाता है।'

दूसरेने कहा—'मुझे भी दालमें काला दीखता है। यह सूरत-शकलमें हमलोगों-जैसा ही है। केवल रंगमें अन्तर है।'

कानेने कहा—'अच्छा, हम सब उसके पास कुछ पीछे चलकर हुआँ-हुआँ तो करें। अभी भेद खुल जायगा।'

सलाह पक्की हो गयी। नकली सियार पशुओंके दरबारमें बैठा था। पीछेकी ओरसे सियारोंकी खूब हुआँ-हुआँ सुनायी पड़ी। उसे अपनी दशा भूल गयी। उसने भी कान खड़े किये।

मुख आकाशकी ओर उठाया और पूँछ फटकारकर हुआँ-हुआँ चिल्लाने लगा।

'अरे, यह तो सियार है !' पशुओंमें क्रोधभरी पुकार मची। वे झपट पड़े और सियार भागे तबतक तो उसकी बोटी-बोटी नोंच डाली गयी।

'उघरहिं अंत न होइ निबाहू।'

—★—

बाबाजी गये चोरी करने

एक बाबाजी एक दिन अपने आश्रमसे चले गङ्गाजी नहाने। बाबाजी धोखेसे आधी रातको ही निकल पड़े थे। रास्तेमें उनको चोरोंका एक दल मिला। चोरोंने बाबाजीसे कहा—'या तो हमारे साथ चोरी करने चलो, नहीं तो मार डालेंगे।'

बेचारे बाबाजी क्या करते, उनके साथ हो लिये। चोरोंने एक अच्छे-से घरमें सेंध लगायी। एक चोर बाहर रहा और सब भीतर गये। साधु बाबाको भी वे लोग भीतर ले गये। चोर तो लगे संदूक ढूँढ़ने, तिजोरी तोड़ने। बाबाजीने देखा कि एक ओर सिंहासनपर ठाकुरजी विराजमान हैं। उन्होंने सोचा—'आ गये हैं तो हम भी कुछ करें। ये ठाकुरजीकी पूजा करने बैठ गये।' बाबाजीने चन्दन घिसा। धूपबत्ती ठीक की और लगे इधर-उधर भोग ढूँढ़ने। वहाँ कुछ प्रसाद था नहीं। सोचा, ठाकुरजीके जगनेपर कोई सती-सेवक आ जायगा तो उससे भोग मँगा लेंगे। ठाकुरजी तो रेशमी दुपट्टा ताने सो रहे थे। पूजाके

लिये उनको जगाना आवश्यक था। बाबाजीने उठाया शङ्ख और लगे 'धूतूधू' करने।

ठाकुरजी तो पता नहीं जगे या नहीं, पर घरके सब सोये लोग चौंककर जाग पड़े। सब चोर सिरपर पैर रखकर भाग खड़े हुए। घरके लोगोंने दौड़कर बाबाजीको पकड़ा। बाबाजीने कहा—'चिल्लाओ मत। ठाकुरजीको भोग लगानेके लिये कुछ दौड़कर ले आओ, तबतक मैं पूजा करता हूँ। पूजा हो जायगी, तब तुम सबको प्रसाद दूँगा और उन चोरोंको भी दूँगा जो सब सेंध लगाकर मेरे साथ इस घरमें आ गये हैं। जाओ, जल्दी करो।' घरके लोगोंको बड़ा आश्चर्य हुआ। पूछनेपर सब बातोंका पता लगा। तब एक स्त्रीने हँसते हुए बाबाजीके पास ठाकुरजीको भोग लगानेके लिये बहुत-से पेड़े लाकर रख दिये। उस समय एक वृद्ध यह गा रहे थे—

बिधि बस सुजन कुसंगत परहीं।
फनि मनि सम निज गुन अनुसरहीं॥

—★—

मुझे मनुष्य चाहिये

एक मन्दिर था आसाममें। खूब बड़ा मन्दिर था। उसमें हजारों यात्री दर्शन करने आते थे। सहसा उसका प्रबन्धक प्रधान पुजारी मर गया। मन्दिरके महन्तको दूसरे पुजारीकी आवश्यकता हुई। उन्होंने घोषणा करा दी कि जो कल सबेरे पहले पहर आकर यहाँ पूजासम्बन्धी जाँचमें ठीक सिद्ध होगा, उसे पुजारी रखा जायगा।

मन्दिर बड़ा था। पुजारीको बहुत आमदनी थी। बहुत-से

ब्राह्मण सबेरे पहुँचनेके लिये चल पड़े। मन्दिर पहाड़ीपर था। एक ही रास्ता था। उसपर भी काँटे और कंकड़-पत्थर थे। ब्राह्मणोंकी भीड़ चली जा रही थी मन्दिरकी ओर। किसी प्रकार काँटे और कंकड़ोंसे बचते हुए लोग जा रहे थे।

सब ब्राह्मण पहुँच गये। महन्तने सबको आदरपूर्वक बैठाया। सबको भगवान्का प्रसाद मिला। सबसे अलग-अलग कुछ प्रश्न और मन्त्र पूछे गये। अन्तमें परीक्षा पूरी हो गयी। जब दोपहर हो गयी और सब लोग उठने लगे तो एक नौजवान ब्राह्मण वहाँ आया। उसके कपड़े फटे थे। वह पसीनेसे भीग गया था और बहुत गरीब जान पड़ता था।

महन्तने कहा—'तुम बहुत देरसे आये !'

वह ब्राह्मण बोला—'मैं जानता हूँ। मैं केवल भगवान्का दर्शन करके लौट जाऊँगा।'

महन्त उसकी दशा देखकर दयालु हो रहे थे। बोले—'तुम जल्दी क्यों नहीं आये ?'

उसने उत्तर दिया—'घरसे बहुत जल्दी चला था। मन्दिरके मार्गमें बहुत काँटे थे और पत्थर भी थे। बेचारे यात्रियोंको उनसे कष्ट होता। उन्हें हटानेमें देर हो गयी।'

महन्तने पूछा—'अच्छा, तुम्हें पूजा करना आता है ?'

उसने कहा—'भगवान्को स्नान कराके चन्दन-फूल चढ़ा देना, धूप-दीप जला देना तथा भोग सामने रखकर पर्दा गिरा देना और शङ्ख बजाना तो जानता हूँ।'

'और मन्त्र ?' महन्तने पूछा।

वह उदास होकर बोला—'भगवान्से नहाने-खानेको कहनेके लिये मन्त्र भी होते हैं, यह मैं नहीं जानता।' सब पण्डित

हँसने लगे कि 'यह मूर्ख भी पुजारी बनने आया है।'

महन्तने एक क्षण सोचा और कहा—'पुजारी तो तुम बन गये। अब मन्त्र सीख लेना, मैं सिखा दूँगा। मुझसे भगवान्ने स्वप्नमें कहा है कि मुझे मनुष्य चाहिये।'

'हमलोग मनुष्य नहीं हैं ?' दूसरे पण्डितोंने पूछा। वे लोग महन्तपर नाराज हो रहे थे। इतने पढ़े-लिखे विद्वानोंके रहते महन्त एक ऐसे आदमीको पुजारी बना दे जो मन्त्र भी न जानता हो, यह पण्डितोंको अपमानकी बात जान पड़ती थी।

महन्तने पण्डितोंकी ओर देखा और कहा—'अपने स्वार्थकी बात तो पशु भी जानते हैं। बहुत-से पशु बहुत चतुर भी होते हैं। लेकिन सचमुच मनुष्य तो वही है, जो दूसरोंको सुख पहुँचानेका ध्यान रखता है, जो दूसरोंको सुख पहुँचानेके लिये अपने स्वार्थ और सुखको छोड़ सकता है।'

पण्डितोंका सिर नीचे झुक गया। उन लोगोंको बड़ी लज्जा आयी। वे धीरे-धीरे उठे और मन्दिरमें भगवान्को और महन्तजीको नमस्कार करके उस पर्वतसे नीचे उतरने लगे।

भाई, तुम सोचो तो कि मनुष्य हो या नहीं ?

—★—

कछुआ गुरु

एक बूढ़े आदमी थे। गङ्गा-किनारे रहते थे। उन्होंने एक झोपड़ी बना ली थी। झोपड़ीमें एक तख्ता था, जलसे भरा मिट्टीका एक घड़ा रहता था और उन्होंने एक कछुआ पाल रखा था। पासकी बस्तीमें दोपहरमें रोटी माँगने जाते तो थोड़े चने भी माँग लाते। वे कछुएको भीगे चने खिलाया करते थे।

एक दिन किसीने पूछा—'आपने यह क्या गंदा जीव पाल रखा है, फेंक दीजिये इसे गङ्गाजीमें।'

बूढ़े बाबा बड़े बिगड़े। वे कहने लगे—'तुम मेरे गुरु-बाबाका अपमान करते हो ? देखते नहीं कि तनिक-सी आहट पाकर या किसीके साधारण स्पर्शसे वे अपने सब अङ्ग भीतर खींचकर कैसे गुड़मुड़ी हो जाते हैं। चाहे जितना हिलाओ-डुलाओ, वे एक पैरतक न हिलायेंगे।

'इससे क्या हो गया ?' उसने पूछा।

'हो क्यों नहीं गया !' मनुष्यको भी इसी प्रकार सावधान रहना चाहिये, लोभ-लालच और भीड़-भाड़में नेत्र मूँदकर राम- राम करना चाहिये।

सच्ची बात तो यह है कि वे किसीको देखते ही भागकर झोपड़ीमें घुस जाते थे और जोर-जोरसे 'राम-राम' बोलने लगते। पुकारनेपर बोलते ही नहीं थे। आज पता नहीं, कैसे बोल रहे थे।

उस आदमीने कहा—'चाहे जो हो, यह बड़ा घिनौना दीखता है।'

बूढ़े बाबाने कहा—'इससे क्या हो गया। अपने परम लाभके लिये तो नीचसे भी प्रेम किया जाता है।'

वे कछुएको हथेलीपर उठाकर पुचकारने लगे और गाने लगे—

'अति नीचहु सन प्रीति करिअ जानि निज परम हित ॥'

—★—

बगुला उड़ गया

जापानमें एक साधारण चरवाहा था। उसका नाम था मूसाई। एक दिन वह गायें चरा रहा था। एक बगुला उड़ता आया और उसके पैरोंके पास गिर पड़ा। मूसाईने बगुलेको उठा लिया। सम्भवतः बाजने बगुलेको घायल कर दिया था। उजले पंखोंपर रक्तके लाल-लाल बिन्दु थे। बेचारा पक्षी बार-बार मुख फाड़ रहा था।

मूसाईने प्यारसे उसपर हाथ फेरा। जलके समीप ले जाकर उसके पंख धोये। थोड़ा जल चोंचमें डाल दिया। पक्षीमें साहस आया। थोड़ी देरमें वह उड़ गया। इसके थोड़े दिन पीछे एक सुन्दर धनवान् लड़कीने मूसाईकी मातासे प्रार्थना की और उससे मूसाईका विवाह हो गया।

मूसाई बड़ा प्रसन्न था। उसकी स्त्री बहुत भली थी। वह मूसाई और उसकी माताकी मन लगाकर सेवा करती थी। वह घरका सब काम अपने-आप कर लेती थी। मूसाईकी माता तो अपने बेटेकी स्त्रीकी गाँवभरमें प्रशंसा ही करती फिरती थी। उसे घरके किसी काममें तनिक भी हाथ नहीं लगाना पड़ता था।

भाग्यकी बात—देशमें अकाल पड़ा। खेतोंमें कुछ हुआ नहीं। मूसाई मजदूरीकी खोजमें माता तथा स्त्रीके साथ टोकियो नगरमें आया। मजदूरी कहीं जल्दी मिलती है? मूसाईके पासके पैसे खर्च हो गये थे। उसको उपवास करना पड़ा। तब उसकी स्त्रीने कहा—'मैं मलमल बना दूँगी। तुम बेच लेना। लेकिन जब मैं मलमल बुनूँ तो मेरे कमरेमें कोई न आवे।'

मूसाईकी समझमें कोई बात नहीं आयी। वह नहीं जानता था कि उसकी स्त्री मलमल कैसे बनावेगी? लेकिन मूसाई

सीधा था। उसे अपनी स्त्रीपर पूरा विश्वास था। उसकी स्त्रीने पहिले कभी झूठ नहीं कहा था। फिर पासमें पैसे थे नहीं। किसी प्रकार कोई पैसे मिलनेका रास्ता निकले तो घरका काम चले।

मूसाईने स्त्रीकी बात चुपचाप मान ली। स्त्री जब उससे कुछ माँगती नहीं तो उसकी बात मान लेनेमें हानि भी क्या थी। उसने अपनी मातासे कह दिया कि जब उसकी स्त्री अपना कमरा बंद कर ले तो कोई उसे पुकारे नहीं और न उसके कमरेमें ही जाये।

दूधके समान उजला मलमल और उसपर छोटे-छोटे लाल छींटें—मूसाईकी स्त्रीने जो मलमल बनायी वह अद्भुत थी। रेशमके समान चमकती थी। बहुत कोमल थी। जब मूसाई उसे बेचने गया तो खुद राजा मिकाडोने मलमल खरीदी। मूसाईको सोनेकी मुहरें मिलीं। अब तो मूसाई धनी हो गया। उसकी स्त्री मलमल बनाती और वह बेच लाता।

एक दिन मूसाईने सोचा—'मेरी स्त्री न रूई लेती है, न रंग। वह मलमल कैसे बनाती है?'

मूसाई छिपकर खिड़कीसे देखने गया, जब स्त्रीने मलमल बनानेका कमरा बंद कर लिया था। मूसाईने देखा भीतर स्त्री नहीं है। एक उजला बगुला बैठा है। वह अपने पंखसे पतला तार नोचता है और पंजोंसे मलमल बुनता है। उसके गलेमें घाव है। घावका रक्त वह पंजेसे वस्त्रपर छिड़ककर छींटे डालता है। मूसाईने समझ लिया कि वही बगुला स्त्री बना है और उपकारका बदला दे रहा है।

मूसाईको बड़ा आश्चर्य हुआ। एक छोटे बगुलेने उपकारका ऐसा बदला दिया है; यह सोचकर उसका हृदय भर आया। उसकी आँखोंमें आँसू आ गये। वह जहाँ-का-तहाँ खड़ा रह गया। उसे वह बात भूल गयी कि उसकी स्त्रीने मना किया है कि मलमल बुनते समय कोई उसे देखने न आवे। उसे तो यह भी याद नहीं रहा कि वह यहाँ क्यों खड़ा है।

इसी समय मूसाईकी माताने पुकारा। मूसाई बोल पड़ा। बगुला चौंका और खिड़कीसे उड़ गया—

जो जीवोंपर दया करता है, उसे अवश्य बड़ा लाभ होता है।

—★—

सत्य बोलो

एक डाकू था। डाके डालता, लोगोंको मारता और उनके रुपये, बर्तन, कपड़े, गहने लेकर चम्पत हो जाता। पता नहीं, कितने लोगोंको उसने मारा। पता नहीं कितने पाप किये।

एक स्थानपर कथा हो रही थी। कोई साधु कथा कह रहे थे। बड़े-बड़े लोग आये थे। डाकू भी गया। उसने सोचा—'कथा समाप्त होनेपर रात्रि हो जायगी। कथामेंसे जो बड़े आदमी घर लौटेंगे, उनमेंसे किसीको मौका देखकर लूट लूँगा।'

कोई कैसा भी हो, वह जैसे समाजमें जाता है, उस समाजका प्रभाव उसपर अवश्य पड़ता है। भगवान्‌की

कथा और सत्सङ्गमें थोड़ी देर बैठने या वहाँ कुछ देरको किसी दूसरे बहानेसे जानेमें भी लाभ ही होता है। उस कथा-सत्सङ्गका मनपर कुछ-न-कुछ प्रभाव अवश्य पड़ता है।

कथा सुनकर उसको लगा कि साधु तो बड़े अच्छे हैं। उसे कथा सुनकर मृत्युका डर लगा था। और मरनेपर पापोंका दण्ड मिलेगा, यह सुनकर वह घबरा गया था। वह साधुके पास गया। 'महाराज ! मैं डाकू हूँ। डाका डालना तो मुझसे छूट नहीं सकता। क्या मेरे भी उद्धारका कोई उपाय है ? उसने साधुसे पूछा।

साधुने सोचकर कहा—'तुम झूठ बोलना छोड़ दो।'

डाकूने स्वीकार कर लिया और लौट पड़ा। कथासे लौटनेवाले घर चले गये थे। डाकूने राजाके घर डाका डालनेका निश्चय किया। वह राजमहलकी ओर चला।

पहरेदारने पूछा—'कौन है ?'

झूठ तो छोड़ ही चुका था, डाकूने कहा—'डाकू'।

पहरेदारने समझा कोई राजमहलका आदमी है। पूछनेसे अप्रसन्न हो रहा है। उसने रास्ता छोड़ दिया और कहा—'भाई, मैं पूछ रहा था। नाराज क्यों होते हो, जाओ।'

वह भीतर चला गया और खूब बड़ा संदूक सिरपर लेकर निकला।

पहरेदारने पूछा—'क्या ले जा रहे हो ?'

उसने कहा—'जवाहरातका संदूक।'

पहरेदारने पूछा—'किससे पूछकर ले जाते हो ?'

डाकूको झूठ तो बोलना नहीं था। उसने सत्य

बोलनेका प्रभाव भी देख लिया था। वह जानता था कि पहरेदारने उसे राजमहलमें भीतर जाने दिया, वह भी सत्यका ही प्रभाव था। नहीं तो पहरेदार उसे भीतर भला कभी जाने देता ? डाकूके मनमें उस दिनके साधुके लिये बड़ी श्रद्धा हो गयी थी। उसका डर एकदम चला गया था। वह सोच रहा था कि यदि इतना धन लेकर मैं निकल गया और पकड़ा न गया तो फिर आगे कभी डाका नहीं डालूँगा। उसे अब अपना डाका डालनेका काम अच्छा नहीं लगता था। पहरेदारसे वह जरा भी झिझका नहीं। उसे तो सत्यका भरोसा हो गया था। उसने कहा—'डाका डालकर ले जा रहा हूँ।'

पहरेदारने समझा कोई साधारण वस्तु है और यह बहुत चिढ़नेवाला जान पड़ता है। उसने डाकूको जाने दिया। प्रातः राजमहलमें तहलका मचा। जवाहरातकी पेटी नहीं थी। पहरेदारसे पता लगनेपर राजाने डाकूको ढूँढ़कर बुलवाया। डाकूके सत्य बोलनेसे राजा बहुत प्रसन्न हुआ। उसने उसे अपने महलका प्रधान रक्षक बना दिया। अब डाकूको रुपयोंके लिये डकैती करनेकी आवश्यकता ही नहीं रही। उसने सबसे बड़ा पाप असत्य छोड़ा तो दूसरे पाप अपने-आप छूट गये—

'नहिं असत्य सम पातक पुंजा।'

—★—

सबसे बड़ा धर्मात्मा

एक राजाके चार लड़के थे। राजाने उनको बुलाकर बताया कि 'जो सबसे बड़े धर्मात्माको ढूँढ़ लायेगा, वही राज्यका अधिकार पायेगा।' चारों लड़के घोड़ोंपर सवार हुए और दिशाओंमें चले गये।

एक दिन बड़ा लड़का लौटा। उसने पिताके सामने एक सेठजीको खड़ा कर दिया और बताया—'ये सेठजी सदा हजारों रुपये दान करते हैं। इन्होंने बहुत-से मन्दिर बनवाये हैं, तालाब खुदवाये हैं और अनेक स्थानपर इनकी ओरसे प्याऊ चलते हैं। तीर्थोंमें इनके सदाव्रत चलते हैं, ये नित्य कथा सुनते हैं, साधु-ब्राह्मणोंको भोजन कराकर भोजन करते हैं। गौ-पूजन करते हैं, इनसे बड़ा धर्मात्मा संसारमें कोई नहीं है।'

राजाने कहा—'ये निश्चय धर्मात्मा हैं।' सेठजीका आदर-सत्कार हुआ और वे चले गये।

दूसरा लड़का एक दुबले-पतले ब्राह्मणको लेकर लौटा। उसने कहा—'इन विप्रदेवने चारों धामों तथा सातों पुरियोंकी पैदल यात्रा की है। ये सदा चान्द्रायणव्रत ही करते रहते हैं। झूठसे तो सदा डरते हैं। इन्हें क्रोध करते किसीने कभी नहीं देखा। नियमसे मन्त्र-जप करके तब जल पीते हैं। तीनों समय स्नान करके संध्या करते हैं। इस समय विश्वमें ये सबसे बड़े धर्मात्मा हैं।'

राजाने ब्राह्मण देवताको प्रणाम किया। उन्हें बहुत-सी दक्षिणा दी और कहा—'ये अच्छे धर्मात्मा हैं।'

तीसरा लड़का भी आया। उसके साथ एक बाबाजी थे। बाबाजीने आते ही आसन लगाकर नेत्र बंद कर दिये।

उनकी बड़ी भारी जटा थी, शरीरमें केवल हड्डियाँ भर जान पड़ती थीं। उस लड़केने बताया कि 'महाराज बहुत प्रार्थना करनेपर पधारे हैं। बहुत बड़े तपस्वी हैं। सात दिनोंमें केवल एक बार दूध पीते हैं। गरमीमें पञ्चाग्नि तापते हैं। सर्दीमें जलमें खड़े रहते हैं। सदा भगवान्‌का ध्यान करते हैं, इनके समान धर्मात्माकी बात सोचना भी कठिन है।'

राजाने महात्माको दण्डवत् किया—महात्मा आशीर्वाद देकर बिना कुछ कहे चलते बने। राजाने कहा—'अवश्य ये बड़े धर्मात्मा हैं।'

सबसे अन्तमें छोटा लड़का आया। साथमें मैले कपड़े पहने एक देहाती किसान था। वह किसान दूरसे ही हाथ जोड़कर डरता हुआ राजाके सामने आया। तीनों बड़े लड़के छोटे भाईकी मूर्खतापर हँसने लगे। छोटे भाईने कहा—'एक कुत्तेके शरीरमें घाव हो गये थे। पता नहीं किसका कुत्ता था, इसने देखा और लगा घाव धोने। मैं इसे ले आया हूँ। पता नहीं, यह धर्मात्मा है या नहीं ? आप पूछ लें।'

राजाने पूछा—'तुम क्या धर्म करते हो ?'

डरते हुए किसानने कहा—'मैं अनपढ़ हूँ, धर्म क्या जानूँ। कोई बीमार होता है तो सेवा कर देता हूँ। कोई माँगता है तो मुट्ठीभर अन्न दे देता हूँ।'

राजाने कहा—'यह सबसे बड़ा धर्मात्मा है।' सब लड़के इधर-उधर देखने लगे, तो राजाने कहा—

दान-पुण्य करना, देवताओंकी और गौकी पूजा करना धर्म है। झूठ न बोलना, क्रोध न करना, तीर्थयात्रा

करना, संध्या करना, पूजा करना भी धर्म है—तपस्या करना तो धर्म है ही; किंतु सबसे बड़ा धर्म है—बिना किसी चाहके असहाय प्राणियोंकी सेवा करना। बिना किसी स्वार्थके भूखेको अन्न देना, रोगीकी टहल करना, कष्टमें पड़े हुएकी सहायता करना— सबसे बड़ा धर्म है। जो दूसरे प्राणियोंकी भलाई करता है, उसकी भलाई अपने-आप होती है। तीनों लोकोंके स्वामी भगवान् उसपर प्रसन्न होते हैं।

'पर हित सरिस धर्म नहिं भाई।'

नरककी यात्रा

'यह तो बड़ा भयानक नरक है।' महाराज युधिष्ठिरको धर्मराजके दूत नरक दिखला रहे थे। महाराज युधिष्ठिरने केवल एक बार आधा झूठ कहा था कि 'अश्वत्थामा मर गया, मनुष्य नहीं हाथी।' सत्यको इस प्रकार घुमा-फिराकर बोलनेके कारण उन्हें नरकको केवल देख लेनेका दण्ड मिला था।

उन्होंने अनेक नरक देखे। कहीं किसीको बिच्छू-सर्प काट रहे थे; कहीं किसीको जीते-जी कुत्ते, सियार या गीध नोच रहे थे; कोई आरेसे चीरा जा रहा था और कोई तेलमें उबाला जा रहा था। इस प्रकार पापियोंको बड़े कठोर दण्ड दिये जा रहे थे।

युधिष्ठिरने यमदूतसे कहा—'ये तो बड़े भयंकर दण्ड हैं। कौन मनुष्य यहाँ दण्ड पाते हैं?'

यमदूतने नम्रतासे कहा—'हाँ महाराज ! ये बड़े भयंकर दण्ड हैं। यहाँ केवल वे ही मनुष्य आते हैं, जो जीवोंको मारते हैं, मांस खाते हैं, दूसरोंका हक छीनते हैं तथा और भी बड़े पाप करते हैं।'

लोग हाय-हाय कर रहे थे। चिल्ला रहे थे। पर युधिष्ठिरके वहाँ रहनेसे उनके कष्ट मिट गये; वे कहने लगे—'आप यहीं रुके रहिये।' युधिष्ठिर वहीं रुक गये। तब स्वयं धर्मराज और इन्द्रने आकर उनको समझाया और कहा कि आपने एक बार छलभरी बात कही थी, उसीसे आपको इस रास्तेसे लाया गया है। आपके कोई परिचित या सम्बन्धी यहाँ नहीं हैं। जो मनुष्य-शरीर धारण करके पाप करते हैं, जीवोंपर दया नहीं करते, उलटे दूसरोंको पीड़ा दिया करते हैं, वे ही इन नरकोंमें आते हैं।'

महाराज युधिष्ठिरने कुछ सोचा। सम्भवतः वे स्मरण कर रहे थे कि—

नर सरीर धरि जे पर पीरा।
करहिं ते सहहिं महा भव भीरा॥

डॉक्टर साहब पिटे

एक डॉक्टर साहब हैं। खूब बड़े नगरमें रहते हैं। उनके यहाँ रोगियोंकी बड़ी भीड़ रहती है। घर बुलानेपर उनको फीसके बहुत रुपये देने पड़ते हैं। वे बड़े प्रसिद्ध हैं। उनकी दवासे रोगी बहुत शीघ्र अच्छे हो जाते हैं।

डॉक्टर साहबके लिये प्रसिद्ध है कि कोई गरीब उन्हें

घर बुलाने आवे तो वे तुरंत अपने ताँगेपर बैठकर देखने चले जाते हैं। उसे बिना दाम लिये दवा देते हैं और आवश्यकता हुई तो रोगीको दूध देनेके लिये पैसे भी दे आते हैं।

डॉक्टर साहबने बताया कि उस समय हमारे पिता जीवित थे। मैंने डॉक्टरीकी नयी-नयी दूकान खोली थी। पर, मेरी डॉक्टरी अच्छी चल गयी थी। एक दिन दूर गाँवसे एक किसान आया। उसने प्रार्थना की कि 'मेरी स्त्री बहुत बीमार है। डॉक्टर साहब ! चलकर उसे देख आवें।'

डॉक्टरने कहा—'इतनी दूर मैं बिना बीस रुपये लिये नहीं जा सकता। मेरी फीस यहाँ दे दो और ताँगा ले आओ तो मैं चलूँगा।'

किसान बहुत गरीब था। उसने डॉक्टरके पैरोंपर पाँच रुपये रख दिये। वह रोने लगा और बोला—'मेरे पास और रुपये नहीं हैं। आप मेरे घर चलें। मैं ताँगा ले आता हूँ। आपके पंद्रह रुपये फसल होनेपर अवश्य दे जाऊँगा।'

डॉक्टर साहबने उसे फटकार दिया। रुपये फेंक दिये और कहा—'मैंने तुम-जैसे भिखमंगोंके लिये डॉक्टरी नहीं पढ़ी है। मुझसे इलाज करानेवालेको पहले रुपयोंका प्रबन्ध करके मेरे पास आना चाहिये। तुम-जैसोंसे बात करनेके लिये हमारे पास समय नहीं है।'

किसानने गिड़गिड़ाकर रोते हुए कहा—'सरकार ! मैं गाँवमें किसीसे कर्ज लेकर जरूर आपको रुपये दूँगा, आप जल्दी चलिये। मेरी स्त्री मर जायगी, सारे बच्चे अनाथ हो जायँगे। मेरी गृहस्थी चौपट हो जायगी।'

किसानकी बात सुनकर डॉक्टर झुँझला उठे और बोले— 'जहन्नुममें जाय तेरी गृहस्थी और बच्चे। पहले रुपये ला और फिर चलनेकी बात कर।'

उनके पिताजी छतपरसे सब सुन रहे थे। उन्होंने डॉक्टर साहबको पुकारा। जैसे ही डॉक्टर साहब पिताके सामने गये, उनके मुखपर एक थप्पड़ पड़ा। इतने जोरका थप्पड़ कि हट्टे-कट्टे बेचारे डॉक्टर चक्कर खाकर गिर पड़े।

पिताजीने कहा—'मैंने तुझे इसलिये पढ़ाकर डॉक्टर नहीं बनाया कि तू गरीबोंके साथ ऐसा बुरा व्यवहार करेगा, उन्हें गालियाँ बकेगा और उनका गला दबायेगा। जा, अभी मेरे घरसे निकल जा और तेरे पालने तथा पढ़ानेमें जितने रुपये लगे हैं, चुपचाप दे जा ! नहीं तो अभी उस गरीबके घर अपने ताँगेमें बैठकर जा। उससे एक पैसा भी दवाका दाम लिया तो मैं मिट्टीका तेल डालकर तेरी दूकानमें आग लगा दूँगा।' डॉक्टरने हाथ जोड़ लिये। तब पिताजी कुछ नम्र होकर बोले—'तेरे ऐसे व्यवहारसे मुझे बड़ी लज्जा आती है। देख, यदि आज बहू बीमार होती, तेरे हाथमें पैसे न होते, तू किसी डॉक्टरके यहाँ जाता और हाथ जोड़कर उससे इलाजके लिये प्रार्थना करता और वह तुझे जवाबमें वही बातें कहता, जो तूने इस किसानसे कही हैं, तो तेरे हृदयमें कितना दुःख होता। मनुष्यको दूसरोंके साथ वही व्यवहार करना चाहिये, जो वह अपने लिये चाहता है। ऐसा करेगा तो तू गरीबोंका आशीर्वाद पायेगा और फूले-फलेगा।'

बेचारे डॉक्टर साहबका एक ओर मुख फूल गया था। उन्होंने सिर नवाकर पिताजीकी बात मान ली और चुपचाप

दवाका बक्स लेकर ताँगेमें उस किसानको बैठाकर चल पड़े। वे कहते हैं कि 'किसी गरीब रोगीके आनेपर मुझे पिताजीकी उस मूर्तिका स्मरण हो आता है और हाथ तुरंत गालपर पहुँच जाता है और साथ ही पिताजीका उपदेश भी याद आ जाता है। धन्य थे मेरे वे पिता।'

—★—

मनुष्य या पशु

एक सच्ची घटना है। नाम मैं नहीं बताऊँगा। बहुत-से लड़के पाठशालासे निकले। पढ़ाईके बीचमें दोपहरकी छुट्टी हो गयी थी। सब लड़के उछलते-कूदते, हँसते-चिल्लाते चले जा रहे थे। पाठशालाके फाटकके सामने सड़कपर एक आदमी भूमिपर लेटा था। किसीने उसकी ओर ध्यान नहीं दिया। सब अपनी धुनमें चले जा रहे थे।

एक छोटे लड़केने उस आदमीको देखा, वह उसके पास गया। वह आदमी बीमार था। उसने लड़केसे पानी माँगा। लड़का पासके घरसे पानी ले आया। बीमारने पानी पीया और फिर लेट गया। लड़का पानीका बर्तन जिसका था, उसे देकर खेलने चला गया।

शामको वह लड़का घर आया। इसने सुना कि उसके पितासे एक सज्जन बता रहे हैं कि 'पाठशालाके सामने दोपहरके बाद एक आदमी आज सड़कपर मर गया। लड़का पिताके पास गया और उसने कहा—'बाबूजी ! वह तो सड़कपर पड़ा था। माँगनेपर मैंने उसे पानी पिलाया था।'

पिता बहुत नाराज हुए। उन्होंने लड़केको कहा—'तुम

मेरे सामनेसे भाग जाओ ! तुमने एक बीमार आदमीको देखकर भी छोड़ दिया। उसे अस्पताल क्यों नहीं पहुँचाया ? तुम मनुष्य नहीं पशु हो।'

डरते-डरते लड़केने कहा—'मैं अकेला था। भला, उसे अस्पताल कैसे ले जाता ?'

पिताने डाँटा—'बहाना मत बनाओ। तुम नहीं ले जा सकते थे तो अपने अध्यापकको तुरंत बताते या घर आकर मुझे बताते। मैं कोई प्रबन्ध करता।'

तुम सोचो कि तुम क्या करते हो ? किसी रोगी, घायल या दुखियाको देखकर यथाशक्ति सहायता करते हो या चले जाते हो ? तुम्हें पता लगेगा कि तुम क्या हो—'मनुष्य या पशु ?'

संतोषका फल

विलायतमें अकाल पड़ गया। लोग भूखों मरने लगे। एक छोटे नगरमें एक धनी दयालु पुरुष थे। उन्होंने सब छोटे लड़कोंको प्रतिदिन एक रोटी देनेकी घोषणा कर दी। दूसरे दिन सबेरे एक बगीचेमें सब लड़के इकट्ठे हुए। उन्हें रोटियाँ बँटने लगीं।

रोटियाँ छोटी-बड़ी थीं। सब बच्चे एक-दूसरेको धक्का देकर बड़ी रोटी पानेका प्रयत्न कर रहे थे। केवल एक छोटी लड़की एक ओर चुपचाप खड़ी थी। वह सबके अन्तमें आगे बढ़ी। टोकरेमें सबसे छोटी अन्तिम रोटी बची थी। उसने उसे प्रसन्नतासे ले लिया और वह घर चली आयी।

दूसरे दिन फिर रोटियाँ बाँटी गयीं। उस बेचारी लड़कीको आज भी सबसे छोटी रोटी मिली। लड़कीने जब घर लौटकर रोटी तोड़ी तो रोटीमेंसे सोनेकी एक मुहर निकली। उसकी माताने कहा कि—'मुहर उस धनीको दे आओ।' लड़की दौड़ी गयी मुहर देने।

धनीने उसे देखकर पूछा—'तुम क्यों आयी हो ?'

लड़कीने कहा—'मेरी रोटीमें यह मुहर निकली है। आटेमें गिर गयी होगी। देने आयी हूँ। तुम अपनी मुहर ले लो।'

धनीने कहा—'नहीं बेटी ! यह तुम्हारे संतोषका पुरस्कार है।'

लड़कीने सिर हिलाकर कहा—'पर मेरे संतोषका फल तो मुझे तभी मिल गया था। मुझे धक्के नहीं खाने पड़े।'

धनी बहुत प्रसन्न हुआ। उसने उसे अपनी धर्मपुत्री बना लिया और उसकी माताके लिये मासिक वेतन निश्चित कर दिया। वही लड़की उस धनीकी उत्तराधिकारिणी हुई।

—★—

असभ्य आचार्य

एक ग्राममें एक लड़का रहता था। उसके पिताने उसे पढ़ने काशी भेज दिया। उसने पढ़नेमें परिश्रम किया। ब्राह्मणका लड़का था, बुद्धि तेज थी। जब वह काशीसे अपने ग्राममें लौटा तब व्याकरणका आचार्य हो गया था। गाँवमें दूसरा कोई पढ़ा-लिखा था नहीं। सब लोग उसका आदर करते थे। इससे उसका घमण्ड बढ़ गया। एक बार उस गाँवमें बारात आयी। बारातमें दो-तीन बूढ़े पण्डित थे। विवाहमें शास्त्रार्थ तो होता ही है। जब सब लोग बैठे, तब शास्त्रार्थकी बारी आयी।

सबसे पहले उस घमण्डी लड़केने ही प्रश्न किया। पण्डितोंने धीरेसे उत्तर दे दिया। अब पण्डितोंमेंसे एकने उससे पूछा— 'असभ्य किसे कहते हैं?'

लड़केने बड़े रोबसे उत्तर दिया—'जो बड़ोंका आदर न करे और उनके सामने उद्दण्ड व्यवहार करे।'

'सम्भवतः आप यह भी मान लेंगे कि असभ्य पुरुषसे बोलनेवाला भी असभ्य ही होता है।'

'निश्चय!' लड़केने बड़े जोशसे स्वीकार किया।

'तब मैं आपसे बोलना बंद करता हूँ।' वृद्ध पण्डित मुसकरा पड़े।

'अर्थात्?' लड़का क्रोधसे लाल हो उठा।

'आपके पूज्य पिता तो वहाँ पीछे बैठे हैं और आप

यहाँ डटे हैं। एक बार बुला तो लेना था उनको।' पण्डितजीने व्यङ्ग्य किया।

'मैं आचार्य हूँ।' लड़केने चिल्लाकर कहा।

पण्डितने हँसते हुए कहा—'आचार्य होनेसे कोई सभ्य नहीं हो जाता। आपने अभी बुद्धिमानोंका साथ नहीं किया है।'

लड़केका पिता ही लड़केसे अधिक लज्जित हो रहा था।

सर्वस्व दान

एक पुराना मन्दिर था। दरारें पड़ी थीं। खूब जोरसे वर्षा हुई और हवा चली। मन्दिरका बहुत-सा भाग लड़खड़ाकर गिर पड़ा। उस दिन एक साधु वर्षामें उस मन्दिरमें आकर ठहरे थे। भाग्यसे वे जहाँ बैठे थे, उधरका कोना बच गया। साधुको चोट नहीं लगी।

साधुने सबेरे पासके बाजारमें चंदा करना प्रारम्भ किया। उन्होंने सोचा—'मेरे रहते भगवान्‌का मन्दिर गिरा है तो इसे बनवाकर तब मुझे कहीं जाना चाहिये।'

बाजारवालोंमें श्रद्धा थी। साधु विद्वान् थे। उन्होंने घर-घर जाकर चंदा एकत्र किया। मन्दिर बन गया। भगवान्‌की मूर्तिकी बड़े भारी उत्सवके साथ पूजा हुई। भण्डारा हुआ। सबने आनन्दसे भगवान्‌का प्रसाद लिया।

भण्डारेके दिन शामको सभा हुई। साधु बाबा दाताओंको धन्यवाद देनेके लिये खड़े हुए। उनके हाथमें

एक कागज था। उसमें लम्बी सूची थी। उन्होंने कहा—'सबसे बड़ा दान एक बुढ़िया माताने दिया है। वे स्वयं आकर दे गयी थीं।'

लोगोंने सोचा कि अवश्य किसी बुढ़ियाने सौ-दो-सौ रुपये दिये होंगे। कई लोगोंने सौ रुपये दिये थे। लेकिन सबको बड़ा आश्चर्य हुआ। जब बाबाने कहा—'उन्होंने मुझे चार आने पैसे और थोड़ा-सा आटा दिया है।' लोगोंने समझा कि साधु हँसी कर रहे हैं। साधुने आगे कहा—'वे लोगोंके घर आटा पीसकर अपना काम चलाती हैं। ये पैसे कई महीनेमें वे एकत्र कर पायी थीं। यही उनकी सारी पूँजी थी। मैं सर्वस्व दान करनेवाली उन श्रद्धालु माताको प्रणाम करता हूँ।'

लोगोंने मस्तक झुका लिये। सचमुच बुढ़ियाका मनसे दिया हुआ यह सर्वस्व दान ही सबसे बड़ा था।

——★——

जब डाकू रोया था

दक्षिण अमेरिकाकी बात है। उन दिनों वहाँ सोनेकी खान निकली थी। दूर-दूरके व्यापारी और बहुत-से मजदूर वहाँ पहुँचे। यों ही उपज बहुत कम हुई थी, फिर बाहरके बहुत लोग पहुँच गये। अकाल-सा पड़ गया। खाने-पहननेकी चीजोंके दाम बहुत बढ़ गये। लोग सड़ी-गली वस्तुओंसे पेट भरने लगे। ज्वर तो पहलेसे फैला था, हैजा भी फैल गया।

पीड़ितोंकी सेवा करनेवाली प्रसिद्ध संस्था 'मुक्ति-सेना'ने अपना दल वहाँ भेजा। उसकी संस्थापिका स्वयं वहाँ पहुँची। लोगोंने डाकुओंका बहुत भय बताया, परंतु 'मुक्ति-सेना' तो सेवा करने आयी थी। उसका दल निर्भय आगे बढ़ता गया। पेड़ोंके नीचे तम्बू पड़े थे और उनके चिकित्सक रोगियोंकी सेवामें लगे थे। एक दिन एक सशस्त्र घुड़सवार आया। उसने उस सेवा-दलकी संस्थापिकाको एक पत्र दिया और एक बढ़िया कम्बल। उस समय वहाँ एक अच्छा कम्बल बहुत बड़ी बात थी। वह सवार पत्रका उत्तर लेकर लौट गया।

दूसरे दिन एक सुन्दर युवक घोड़ेपर आया। वह उस महिमामयी नारीके आगे घुटनोंके बल बैठ गया। उसने कहा—'आपने मेरा कम्बल स्वीकार करके मुझपर बड़ी कृपा की। जो सबकी सेवामें लगा है, उसने इस अधमको अपनी एक नन्हीं सेवाका अवसर तो दिया।'

महिलाने कहा—'क्या तुम मेरे साथ परमेश्वरकी प्रार्थनामें सम्मिलित होना पसंद करोगे?'

वह तुरंत तैयार हो गया। लोग जिसे पत्थरके हृदयका पिशाच समझते थे, वह उस दिन प्रार्थनामें बच्चोंकी भाँति फूट-फूटकर रोया। वही उन डाकुओंका प्रधान अध्यक्ष था।

मैं मनुष्य बनूँगा

एक बार एक देवतापर ब्रह्माजी प्रसन्न हो गये। उस देवताको महर्षि दुर्वासाने शाप दे दिया था कि 'तू अब देवता नहीं रहेगा।' देवताने कहा—'न सही देवता। मैं बहुत दिन देवता रह चुका। स्वर्गके भोगसे ऊब गया।' उसने बूढ़े बाबा ब्रह्माकी प्रार्थना की। ब्रह्माजीने प्रसन्न होकर कहा—'तुम जो कहोगे, तुमको वही बना दिया जायगा।'

देवताने पहले कुछ देर सोचा और फिर कहा—'एक बार मुझे सब लोक देख आने दीजिये।'

ब्रह्माजीने स्वीकार कर लिया। देवता भला देवलोकमें क्या देखता। नाचने-गानेवाले गन्धर्व, यक्ष, किन्नर—ये सब तो उसके सामने सेवक ही थे। देवताओंके राजा इन्द्रका नन्दन नामक बगीचा तथा पारिजात नामक पेड़ भी उसका कई बार देखा हुआ ही था। वह गया ऊपरके लोकोंमें। उसने जनलोक, तपोलोक देखे। इनसे आगे महर्लोक और सत्यलोक भी देख लिया। वैकुण्ठ, साकेत, गोलोक और शिवलोक जानेकी उसे आज्ञा नहीं थी। उसने सोचा—'इन लोकोंमें ऋषि बनकर रहनेसे तो तपस्या करनी होगी, भोग यहाँ है नहीं। हमने जीवनभर स्वर्गके भोग भोगे हैं। अब इस बखेड़ेमें कौन पड़े।'

वह सीधे नीचे चला पातालकी ओर। उसने दैत्योंके बलकी बड़ी प्रशंसा सुनी थी। वह नागलोकको तो देखकर ही डर गया। बड़े भारी-भारी सर्प थे वहाँ। उसने दैत्योंको देखा, वे काले, कुरूप और उजड्ड थे। इतना कुरूप होना वह नहीं चाहता था। वह पृथ्वीपर आ गया।

'मैं पक्षी बनूँ तो उड़ता फिरूँगा। चाहे जहाँके फल खा सकूँगा।' वह सोच रहा था। इतनेमें उसने देखा हवाई जहाज।

'ओह मनुष्य—यह भी उड़ता है।' उसे डर लगा कि पक्षी बननेपर कोई मनुष्य गोली मार देगा।

'मैं जलमें रहूँगा।' उसने सोचा। परंतु जलमें ऊपर जहाज और भीतर पनडुब्बी चल रही थी। मनुष्यका भय यहाँ भी था। जलमें भी एक जीव दूसरेपर आक्रमण ही करते रहते हैं।

'हाथी, सिंह—सब बलवान् पशु उसने देखे। मनुष्य सबको पकड़कर बंद कर लेता है। सबको सेवक बना लेता है। मनुष्य पृथ्वीपर रेल और मोटरसे दौड़ता है। पानी और हवामें भी चलता है। पानी, हवा और बिजलीसे भी काम लेता है। हजारों कोसोंकी बात उसी समय सुनता है, गाना सुनता है, वहाँकी तसवीर भी देख लेता है। मनुष्य बड़ा बुद्धिमान् है और सुन्दर भी है। वह सोचते-सोचते लौटा।

'वैकुण्ठ, साकेत, गोलोक और शिवलोक कैसे हैं और उनमें क्या है?' उसने ब्रह्माजीसे पूछा।

'वे बड़े विचित्र लोक हैं, वहाँ यहाँके सूरज-चाँदका प्रकाश नहीं है। वे अपने ही तेजसे प्रकाशित हैं, वहाँ भगवान् तथा उनके भक्त रहते हैं। वहाँ सदा रहनेवाला परम सुख है तथा नित्य सौन्दर्य है, वहाँ दुःखका पतातक नहीं।' ब्रह्माजीने बताया। देवता शीघ्रतासे बोला—'तब मैं................।'

ब्रह्माजीने उसे बोलने ही नहीं दिया। वे बीचमें ही कहने लगे—'वहाँ तो केवल मनुष्य अपनी साधना एवं भक्तिसे ही जा सकता है।'

'तब मैं मनुष्य बनूँगा। देवताने झटपट बता दिया। उसने देखा था कि ब्रह्माजी प्रसन्न न होते तो वह कुछ भी नहीं बन सकता था और मनुष्य तो देवता भी बन जाता है।

ब्रह्माजीने उसे मनुष्य बनाकर बताया—

'नर तन सम नहिं कवनिउ देही।'

गाली पास ही रह गयी

एक लड़का बड़ा दुष्ट था। वह चाहे जिसे गाली देकर भाग खड़ा होता। एक दिन एक साधु बाबा एक बरगदके नीचे बैठे थे। लड़का आया और गाली देकर भागा। उसने सोचा कि गाली देनेसे साधु चिढ़ेगा और मारने दौड़ेगा, तब बड़ा मजा आयेगा; लेकिन साधु चुपचाप बैठे रहे। उन्होंने उसकी ओर देखातक नहीं।

लड़का और निकट आ गया और खूब जोर-जोरसे गाली बकने लगा। साधु अपने भजनमें लगे थे। उन्होंने समझ लिया कि कोई कुत्ता या कौवा चिल्ला रहा है। एक दूसरे लड़केने कहा—'बाबाजी ! यह आपको गालियाँ देता है न ?'

बाबाजीने कहा—'हाँ भैया, देता तो है, पर मैं लेता कहाँ हूँ। जब मैं लेता नहीं तो सब वापस लौटकर इसीके पास रह जाती हैं।'

लड़का—'लेकिन यह बहुत खराब गालियाँ देता है।'

साधु—'यह तो और खराब बात है। पर मेरे तो वे कहीं चिपकी हैं नहीं, सब-की-सब इसीके मुखमें भरी हैं। इसका मुख गंदा हो रहा है।'

गाली देनेवाला लड़का सुन रहा था साधुकी बात। उसने सोचा,'यह साधु ठीक कह रहा है। मैं दूसरोंको गाली देता हूँ तो वे ले लेते हैं। इसीसे वे तिलमिलाते हैं, मारने दौड़ते हैं और दुःखी होते हैं। यह गाली नहीं लेता तो सब मेरे पास ही तो रह गयीं।' लड़केको बड़ा बुरा लगा,'छिः ! मेरे पास कितनी गंदी गालियाँ हैं।'

अन्तमें वह साधुके पास गया और बोला—'बाबाजी ! मेरा अपराध कैसे छूटे और मुख कैसे शुद्ध हो ?'

साधु—'पश्चात्ताप करने तथा फिर ऐसा न करनेकी प्रतिज्ञा करनेसे अपराध दूर हो जायगा। और राम-राम कहनेसे मुख शुद्ध हो जायगा।'

बड़ोंकी बात मानो

एक बड़ा भारी जंगल था, पहाड़ था और उसमें पानीके शीतल निर्मल झरने थे। जंगलमें बहुत-से पशु रहते थे। पर्वतकी गुफामें एक शेर, एक शेरनी और शेरनीके दो छोटे बच्चे रहते थे। शेर और शेरनी अपने बच्चोंको बहुत प्यार करते थे।

जब शेरके बच्चे अपने माँ-बापके साथ जंगलमें निकलते थे, तब उन्हें देखकर जंगलके दूसरे पशु भाग जाया करते थे। लेकिन शेर-शेरनी अपने बच्चोंको बहुत कम अपने साथ ले जाते थे। वे बच्चोंको गुफामें छोड़कर वनमें अपने भोजनकी खोजमें चले जाया करते थे।

शेर और शेरनी अपने बच्चोंको बार-बार समझाते थे कि वे अकेले गुफासे बाहर भूलकर भी न निकलें। लेकिन बड़े बच्चेको यह बात अच्छी नहीं लगती थी। एक दिन जब बच्चोंके माँ-बाप जंगलमें गये थे, बड़े बच्चेने छोटेसे कहा—'चलो झरनेसे पानी पी आवें और वनमें थोड़ा घूमें। हरिनोंको डरा देना मुझे बहुत अच्छा लगता है।'

छोटे बच्चेने कहा—'पिताजीने कहा है कि अकेले गुफासे मत निकलना। झरनेके पास जानेको तो उन्होंने बहुत मना किया है। तुम ठहरो। पिताजी या माताजीको आने दो। हम उनके साथ जाकर पानी पी लेंगे।'

बड़े बच्चेने कहा—'मुझे प्यास लगी है। सब पशु तो हमलोगोंसे डरते ही हैं। डरनेकी क्या बात है ?'

छोटा बच्चा अकेला जानेको तैयार नहीं हुआ। उसने कहा—'मैं तो माँ-बापकी बात मानूँगा। मुझे अकेला जानेमें डर लगता है।' बड़े भाईने कहा—'तुम डरपोक हो, मत जाओ, मैं तो जाता हूँ।' बड़ा बच्चा गुफासे निकला और झरनेके पास गया। उसने भर पेट पानी पिया और तब हरिनोंको ढूँढ़ने इधर-उधर घूमने लगा।

उस जंगलमें उस दिन कुछ शिकारी आये थे। शिकारियोंने दूरसे शेरके अकेले बच्चेको घूमते देखा तो सोचा कि इसे पकड़कर किसी चिड़ियाखानेको बेच देनेसे रुपये मिलेंगे। छिपे-छिपे शिकारी लोगोंने शेरके बच्चेको चारों ओरसे घेर लिया और एक साथ उसपर टूट पड़े। उन लोगोंने कम्बल और कपड़े डालकर उस बच्चेको पकड़ लिया।

बेचारा शेरका बच्चा क्या करता। वह अभी कुत्ते जितना बड़ा भी नहीं हुआ था। उसे कम्बलमें खूब लपेटकर उन लोगोंने रस्सियोंसे बाँध दिया था। वह न तो छटपटा सकता था, न गुर्रा सकता था।

शिकारियोंने इस बच्चेको एक चिड़ियाखानेको बेच दिया। वहाँ वह एक लोहेके कटघरेमें बंद कर दिया गया। वह

बहुत दुःखी था। उसे अपने माँ-बापकी बड़ी याद आती थी। बार-बार वह गुर्राता और लोहेकी छड़ोंको नोचता था, लेकिन उसके नोचनेसे छड़ टूट तो सकती नहीं थी।

जब भी वह शेरका बच्चा किसी छोटे बालकको देखता था, बहुत गुर्राता और उछलता था। यदि कोई उसकी भाषा समझता तो वह उससे अवश्य कहता—'तुम अपने माँ-बाप तथा बड़ोंकी बात अवश्य मानना। बड़ोंकी बात न माननेसे पीछे पश्चात्ताप करना पड़ता है। मैं बड़ोंकी बात न माननेसे ही यहाँ बंदी हुआ हूँ।'

सच है—

जे सठ निज अभिमान बस सुनहिं न गुरूजन बैन।
ते जग महँ नित लहहिं दुख कबहुँ न पावहिं चैन॥

स्वच्छता

एक किसानने एक बिल्ली पाल रखी थी। सफेद कोमल बालोंवाली बिल्ली किसानकी खाटपर ही रातको उसके पैरके पास सो जाती थी। किसान जब खेतपरसे घर आता तो बिल्ली उसके पास दौड़कर जाती और उसके पैरोंसे अपना शरीर रगड़ती, म्याऊँ-म्याऊँ करके प्यार दिखलाती। किसान अपनी बिल्लीको थोड़ा-सा दूध और रोटी देता था।

एक दिन शामको किसानके लड़केने अपने पितासे कहा—'पिताजी ! आज रातको मैं आपके साथ सोऊँगा।'

किसान बोला—'नहीं। तुम्हें अलग खाटपर सोना चाहिये।'

लड़का कहने लगा—'आप बिल्लीको तो अपनी खाटपर सोने देते हैं, परंतु मुझे क्यों नहीं सोने देते ?'

किसानने कहा—'तुम्हें खुजली हुई है। तुम्हारे साथ सोनेसे मुझे भी खुजली हो जायगी। पहले तुम अपनी खुजली अच्छी होने दो।'

लड़का खुजलीसे बहुत तंग था। उसके पूरे शरीरमें छोटे-छोटे फोड़े-जैसे हो रहे थे। खाजके मारे वह बेचैन रहता था। उसने अपने पितासे कहा—'यह खुजली मुझे ही क्यों हुई है ? इस बिल्लीको क्यों नहीं हुई ?'

किसान बोला—'कल सबेरे तुम्हें मैं यह बात बताऊँगा।'

दूसरे दिन सबेरे किसानने बिल्लीको कुछ अधिक दूध और रोटी दी, लेकिन जब बिल्लीका पेट भर गया, वह दूध-रोटी छोड़कर दूर चली गयी और धूपमें बैठकर बार-बार अपना एक पैर चाटकर अपने मुँहपर फिराने लगी।

किसानने अपने लड़केको वहाँ बुलाया और बोला—'देखो, बिल्ली कैसे अपना मुँह धो रही है। यह इसी प्रकार अपना सब शरीर स्वच्छ रखती है। इसीसे इसे खुजली नहीं होती। तुम अपने कपड़े और शरीरको मैला रखते हो, इससे तुम्हें खुजली हुई है। मैलमें एक प्रकारका विष होता है। वह पसीनेके साथ जब शरीरके चमड़ेमें लगता है और भीतर जाता है, तब खुजली, फोड़े और दूसरे भी कई रोग हो जाते हैं।'

लड़केने कहा—'मैं आज अपने सब कपड़े गरम पानीमें उबालकर धोऊँगा। बिस्तर और चद्दर भी धोऊँगा। खूब नहाऊँगा। पिताजी ! इससे मेरी खुजली दूर हो जायगी।'

किसानने बताया—'शरीरके साथ पेट भी स्वच्छ रखना

चाहिये। देखो, बिल्लीका पेट भर गया तो उसने दूध भी छोड़ दिया। पेट भर जानेपर फिर नहीं खाना चाहिये। ऐसी वस्तुएँ भी नहीं खानी चाहिये, जिनसे पेटमें गड़बड़ी हो। मिर्च, खटाई, बाजारकी चाट, अधिक मिठाइयाँ खाने और चाय पीनेसे पेटमें गड़बड़ी हो जाती है। इससे पेट साफ नहीं रहता। पेट साफ न रहे तो बहुत-से रोग होते हैं। बुखार भी पेटकी गड़बड़ीसे आता है। जो लोग जीभके जरा-से स्वादके लिये बिना भूख ज्यादा खा लेते हैं अथवा मिठाई, घीमें तली हुई चीजें, दही-बड़े आदि बार-बार खाते रहते हैं, उनको एक खुजली ही क्यों और भी तरह-तरहकी बीमारियाँ हो जाती हैं। पेट साफ रखनेके लिये चोकर-मिले आटेकी रोटी, हरी सब्जी तथा मौसमी, सस्ते फल अधिक खाने चाहिये।'

किसानके लड़केने उस दिनसे अपने कपड़े स्वच्छ रखने आरम्भ कर दिये। वह रोज शरीर रगड़कर स्नान करता है। वह इस बातका ध्यान रखता है कि ज्यादा न खाय तथा कोई ऐसी वस्तु न खाय, जिससे पेटमें गड़बड़ी हो। उसकी खुजली अच्छी हो गयी है। वह चुस्त शरीरका तगड़ा और बलवान् हो गया है। उसके पिता और दूसरे लोग भी अब उसे बड़े प्रेमसे अपने पास बैठाते हैं।

★

श्रद्धाके बिना सिद्धि नहीं

एक बाबूजी थे। अंग्रेजी पढ़े-लिखे, कोट-बूट-हैट-पतलून पहननेवाले। वे सदा अंग्रेजी ही बोलते थे। नौकरपर बिगड़ते तो अंग्रेजीमें गाली देते और कुत्तेपर प्रसन्न होते तो अंग्रेजीमें आशीर्वाद देते।

बाबूजीके एक लड़का था। दुर्भाग्यसे वह बीमार हो गया। डॉक्टर आये। एक, दो, चार डॉक्टर आये और लड़केकी भुजामें सुई चुभाकर चले गये। वैद्य आये, हकीम आये, बटिका दी और दवा खिलायी; पर लड़का अच्छा नहीं हुआ। उसकी बीमारी बढ़ती ही गयी।

एक दिन एक साधु आये। साधुने कहा—'हनुमान्‌जीको सिन्दूर चढ़ा दो और सवा सेर लड्डू, तो लड़का अच्छा हो जायगा।'

बाबूजीने कहा—'मैं पत्थरको पत्थर ही मानता हूँ, पर तुम कहते हो तो सिन्दूर पोतकर लड्डू दिखा आऊँगा' लड़केके अच्छे होनेकी लालचमें वे इतना कर आये।

परंतु लड़केकी बीमारी वैसी ही रही।

सबेरे बाबूजी साधुके पास गये और बोले कि 'लड़का अच्छा नहीं हुआ।' साधुने कहा—'लाओ मुझे दो सिन्दूर, घी, मिठाई, फूल और धूपबत्ती।'

साधुने हनुमान्‌जीकी पूजा की और प्रसादका सिन्दूर लड़केके मस्तकपर लाकर लगा दिया। लड़का उठकर बैठ गया। उसका ज्वर उतर गया। बाबूजीने आश्चर्यसे पूछा—'तुम्हारी पूजासे यह अच्छा हो गया, मेरी पूजासे क्यों नहीं हुआ ?'

'तुमने पूजा ही कहाँ की ?' साधुने कहा—

'मैंने पूजा तो की।'

'बिना श्रद्धाके पूजा कैसी और बिना पूजाके बीमारी कैसे मिटती ?'